आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

जून 2024

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/-₹



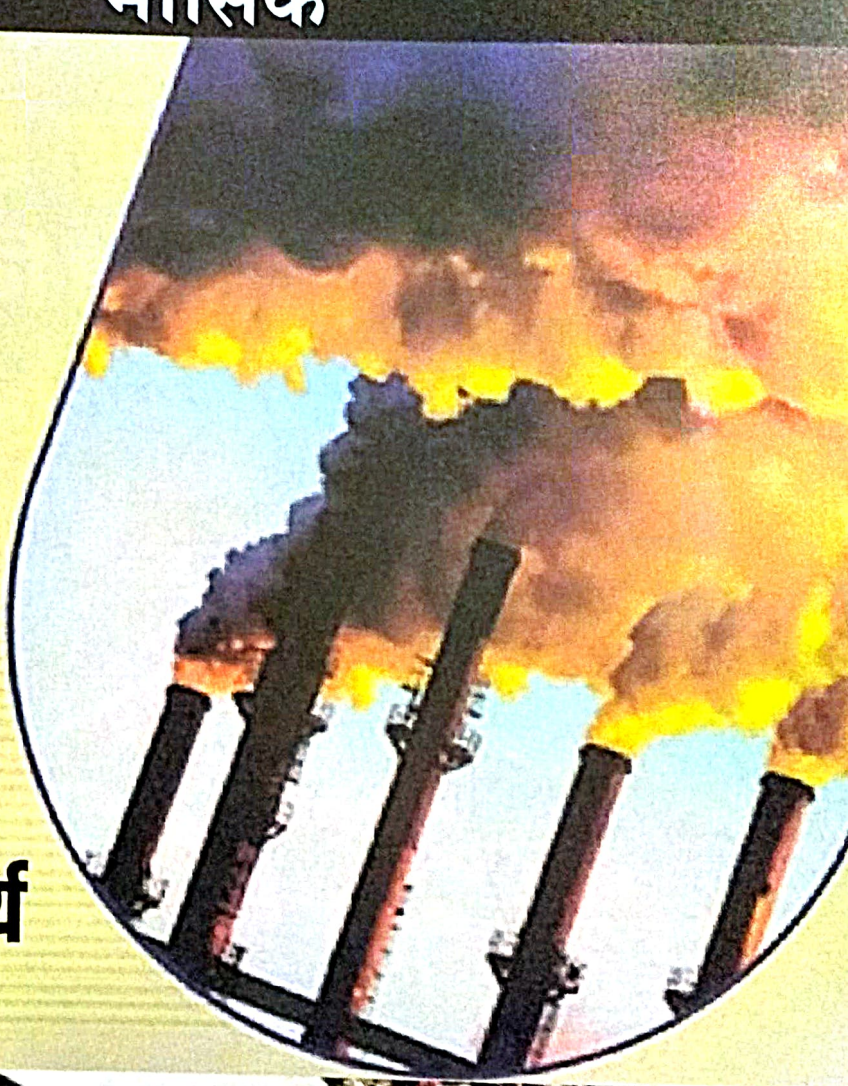

पर्यावरण के रण में टूट रहा धरती का धैर्य



"भलाई और बुराई समान नहीं है। तुम (बुरे आचरण की बुराई को) अच्छे से अच्छे आचरण के द्वारा दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके बीच बैर पड़ा हुआ था, जैसे वह कोई घनिष्ठ मित्र है।"

(क़ुरआन, 41:34)



with best compliment from

Jb. Badrul Haque Khan
Phagwara (Punjab)

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि

एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰ पांच वर्ष 1400/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
ASILA OFFSET PRINTERS
1299, KALAN MAHAL,
NEW DELHI-110002

संपादक : शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 33 अंक 12 जून 2024

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
ग्लोबल स्टूडेंट्स मूवमेंट के मायने
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
पूंजीवादी साम्राज्यवाद और मीडिया ?
फ़हीमुद्दीन अहमद

सौंदर्य बोध 11
मानवता का मुकुट
एम. शैज़ी

मुख्य स्तंभ 15
पर्यावरण के रण में टूट रहा धरती का धैर्य
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
तपती धरती और बढ़ती दुश्वारियां
मनीष कुमार चौधरी

समाधान 23
वर्तमान जलवायु संकट और इस्लामी शिक्षाएं
संपादन प्रभाग

कविता 26
कड़वी हवा
गुलज़ार

मंथन 27
सेहत से खिलवाड़ क्यों?
जितेंद्र गौतम

शिक्षा विमर्श 30
शिक्षा का बाज़ार या बाज़ार की शिक्षा?
डॉ. प्रदीप कुमार

विचारणीय 33
'जीव-हत्या' की वास्तविकता
संपादन प्रभाग

इबारत 35
"बर्डमैन ऑफ़ इंडिया"
संपादन प्रभाग

सेहत 38
गर्मियों में लू से बचाएं ख़ुद को
संपादन प्रभाग

करियर 41
डिजिटल मार्केटिंग : एक उभरता हुआ करियर विकल्प
संपादन प्रभाग

कहानी 44
और जवाब मिल गया...
लियोपोल्ड

लघुकथा 48
तीसरी बार...
रणविजय कुमार सिंह

आख़िरी पन्ना 49
पारलौकिक जीवन
अबरार अहमद

मूल प्रश्न

ग्लोबल स्टूडेंट्स मूवमेंट के मायने

शिब्ली अरसलान

मैं आज (11 मई) जब सम्पादकीय लिखने बैठा हूं तो मेरे सामने संयुक्त राष्ट्र की महासभा में फ़िलिस्तीन को संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बनाने हेतु हुई वोटिंग (10 मई) की ख़बर सर्व प्रमुख है। भारत समेत 143 देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के प्रस्ताव के पक्ष में वोटिंग करते हुए फ़िलिस्तीन को संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बनने योग्य माना है। प्रस्ताव के ड्राफ़्ट में कहा गया था कि फ़िलिस्तीन योग्य है, अतः उसे पूर्ण सदस्य देश के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। इसमें सिफ़ारिश की गई थी कि सुरक्षा परिषद इस मामले पर 'अनुकूल तरीक़े से एक बार फिर से विचार करे' (reconsider the matter favourably)। स्पष्ट रहे कि इसी वर्ष अप्रैल में सुरक्षा परिषद में ये प्रस्ताव विचार के लिए लाया गया था, जिसे अमेरिका ने वीटो कर दिया था।

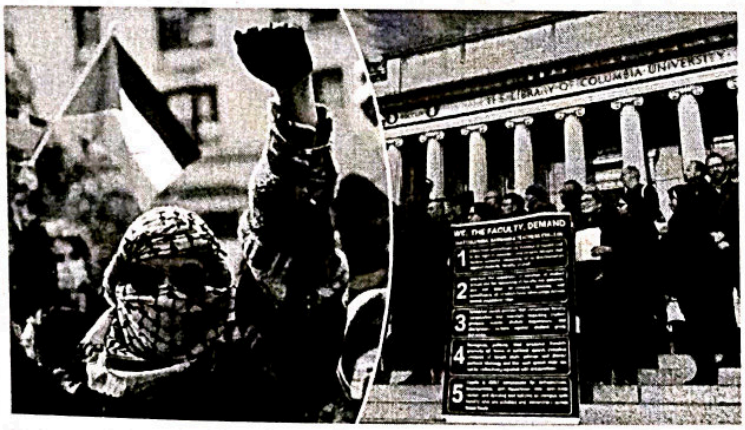

वोटिंग में 9 वोट प्रस्ताव के विरोध में पड़े, जिसमें अमेरिका और इज़राइल भी शामिल हैं, जबकि 25 देश वोटिंग से अनुपस्थित रहे। हालांकि अभी फ़िलिस्तीन पूर्ण सदस्य नहीं बना है, सिर्फ़ इसके लिए क्वालीफाई कर पाया है। पूर्ण सदस्यता की मंज़ूरी तो संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद को देनी है, अमेरिका ने UNGA में ड्राफ़्ट का विरोध करके सुरक्षा परिषद के लिए अपनी मंशा ज़ाहिर कर दी है, कुछ अख़बारों के अनुसार अमेरिका ने स्पष्ट शब्दों में सुरक्षा परिषद (UNSC) में वीटो की धमकी भी दे दी है, यानी ये तय है कि फ़िलिस्तीन को पूर्ण सदस्य देश का दर्जा अभी नहीं मिलने जा रहा। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के अनुसार, नॉन-स्टेट मेंबर रहते हुए कुछ विशेषाधिकार बढ़ जाएंगे तभी तो अमेरिका ने सुरक्षा परिषद में वीटो की धमकी दी है और इज़राइल क्रोध में अनियंत्रित हुआ जा रहा है। (फ़िलिस्तीनियों के जान के शत्रु इन दोनों देशों को फ़िलिस्तीनी मज़लूमों के लिए कोई "विशेषाधिकार" तक स्वीकार्य नहीं है)

वैसे पहली बार 143 देशों का इस मुद्दे पर भरपूर समर्थन मिलना, अपने आप में बड़ी वैचारिक और नीतिगत तब्दीली बताई जा रही है। क्या ये हैरत-अंगेज़ नहीं कि अमेरिकी ख़ेमे के फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड जैसे देशों ने भी अमेरिकी मंशा के विपरित या तो फ़िलिस्तीन के समर्थन में वोट डाला या वोटिंग प्रक्रिया से दूरी बनाकर रखी? संयुक्त राष्ट्र महासभा का मूड भांपते हुए इज़राइल के राजदूत ने ख़ूब आंखें लाल- पीली की। उन्होंने हमास का ज़िक्र करते हुए यहां तक कह दिया कि यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र को 'आधुनिक नाज़ियों' के लिए खोलता है। इज़राइली दूत ने ग़ज़ा में हमास के प्रमुख यह्या सिनवार की एक तस्वीर दिखाते हुए कहा–

"आप भविष्य के 'आतंकी राज्य' को भी विशेषाधिकार देने और लिखने वाले हैं। आपने संयुक्त राष्ट्र को आधुनिक

नाज़ियों, हमारे समय के हिटलर के लिए खोल दिया है...। मैं आपके सामने आज के मतदान का भावी परिणाम बताता हूं...जल्द ही राष्ट्रपति बनने वाले यह्या सिनवार हमास राज्य के तानाशाह राष्ट्रपति, संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित, संयुक्त राष्ट्र की महासभा के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करेंगे...।'

यही नहीं अपना आपा खोते हुए अपने भाषण के अंत में इज़राइली दूत ने 'यूएन चार्टर' के टुकड़े-टुकड़े कर दिए यह बताने के लिए कि महासभा संयुक्त राष्ट्र में 'फ़िलिस्तीनी आतंकवाद' के प्रवेश के समर्थन में क्या करने जा रही है।

इज़राइली दूत के इस आक्रोश की 'अंतर्कथा' (inside story OR Between the lines) थोड़े से ग़ौर व फ़िक्र से बा-आसानी समझ में आ जाती है। इसके साथ ही इज़राइली दूत के वक्तव्य से एक प्रकार से ये "अघोषित घोषणा" भी हो जाती है कि फ़िलिस्तीन को अब पूर्ण देश का स्टेटस मिलकर रहेगा। इज़राइल का वैश्विक षड्यंत्र और अमेरिकी शैतानी गठजोड़ का मकड़जाल अब ज़्यादा देर तक नहीं चलने वाला।

याद रहे कि संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता के लिए फ़िलिस्तीन के प्रस्ताव पर बहस और वोटिंग ग़ज़ा पट्टी में इज़राइल और हमास के बीच छिड़ी युद्ध के सात महीने बाद हुई है। हालांकि फ़िलिस्तीन की ये मांग पुरानी है। आज और इतने दिनों के युद्ध के बाद ये प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र की महासभा में क्यों? जवाब बेहद सरल है–दुनिया में तेज़ी से बौद्धिक-वैचारिक बेदारी आ रही है। 'आधुनिक लोकतंत्र की जनक' और 'आज़ादी एवं मानव अधिकार' की चैंपियन बनने वाली पश्चिमी दुनिया के शासकों द्वारा कमज़ोर समूहों और बेबस लोगों के मानवाधिकार पर जिस तरह डाका डाला जा रहा, इसने विश्व समुदाय और ख़ास तौर पर कॉलेज-यूनिवर्सिटीज़ की नई पीढ़ी को अंदर से हिला कर रख दिया है।

अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय के छात्रों की आवाज़ अब एक ग्लोबल स्टूडेंट मूवमेंट का रूप ले रही है। अमेरिका की सड़कें, यूनिवर्सिटीज़ और कॉलेज आजकल इज़राइल के विरोध और फ़िलिस्तीन के समर्थन में गुंजायमान् हैं...अमेरिकी प्रशासन अपने प्रबुद्ध छात्रों की आवाज़ को दबाने की जितनी कोशिश कर रहा है, उतनी ही ये आवाज़ मुखर, संगठित और प्रबल हो रही है। अब ये आवाज़ कोलंबिया और हावर्ड से आगे बढ़कर फ्रांस, जर्मनी और नीदरलैंड से होते हुए ऑक्सफोर्ड तक पहुंच गयी है। इंशाअल्लाह ये दुनिया भर के छात्रों के दिलों पर दस्तक देगी और विश्व समुदाय के अंतर्मन को झकझोरेगी...।

वैश्विक नव-साम्राज्यवाद का शिकंजा और नव-उपनिवेशवाद का चंगुल अब टूट कर रहेगा...हम एक ऐतिहासिक पड़ाव पर हैं...ग़ज़ा का संघर्ष नई दुनिया की इबारत लिख रहा है।

कोलंबिया विश्वविद्यालय के बाद अब दूसरी जगहों पर भी छात्रों के साथ शिक्षक भी आ खड़े हुए हैं। ये लहर पूरी दुनिया में फैल कर रहेगी। काश अहिंसा, मुक्ति और प्रीत के नग़मे गा कर बेसुध पड़े हम इंडिया वालों की चेतना भी जगे।

इस दुनिया को सभ्य कहलाने और विश्व समुदाय को आज़ाद कहलाने का हक़ नहीं रह गया है अब, यदि दुनिया के अमीर मुल्क पैसे, टेक्नोलॉजी और अत्याधुनिक हथियार के नशे में फ़िलिस्तीनियों पर इस तरह खुला ज़ुल्म जारी रखें, फंसी हुई रफ़ह की आबादी पर बम्बारी की जाए। पिछले 80 वर्षों में क्या-क्या नहीं हुआ उनके साथ...अब इन सात महीनों में जो कुछ हुआ है उनके साथ और जो अब भी जारी है, किसी दिल और आंख रखने वाले इन्सान के लिए शब्द नहीं हो सकते इसे बयान करने के लिए...।

अब फ़ैसले की घड़ी आन पड़ी है। फ़िलिस्तीन को आज़ाद होना है, आज़ादी और लोकतंत्र का गगनभेदी नारा लगाने वाली इस सभ्य और आज़ाद विश्व बिरादरी को स्पष्ट तौर पर अपने पक्ष की घोषणा करना है। बहुत हो गया...7 महीने, 70 साल की तरह बीत गए।

क्या आज़ादी का गगनभेदी नारा, महिलाओं को कपड़ों और घरों से आज़ाद करके मर्दों की वासना की संतुष्टि के लिए लगाया गया था? क्या ये ज़माना बस इसलिए आज़ाद है कि लड़कियों को लड़कों के साथ जॉब-मार्केट में खड़ा कर दिया जाए? क्या ये आधुनिक युग बस इसलिए स्वतंत्र है कि अब समलैंगिकता को क़ानूनी दर्जा मिल गया है?

छात्र और बौद्धिक जगत को पूरी मुखरता के साथ ये पूछना चाहिए कि उन्हें ज़ालिम को ज़ालिम कहने और ज़ालिमों के हाथ पकड़ने की आज़ादी क्यों नहीं? ■■

“

जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्मों का सिलसिला टूट जाता है। अलबत्ता तीन चीज़ें ऐसी हैं जो इससे अलग हैं- जारी रहने वाला सदक़ा या ज्ञान जिससे फ़ायदा उठाया जाए, या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे।

(हदीस : मुस्लिम)

”

A Well Wisher

Jb. K. K. Salim Sb.

[Karnatka]

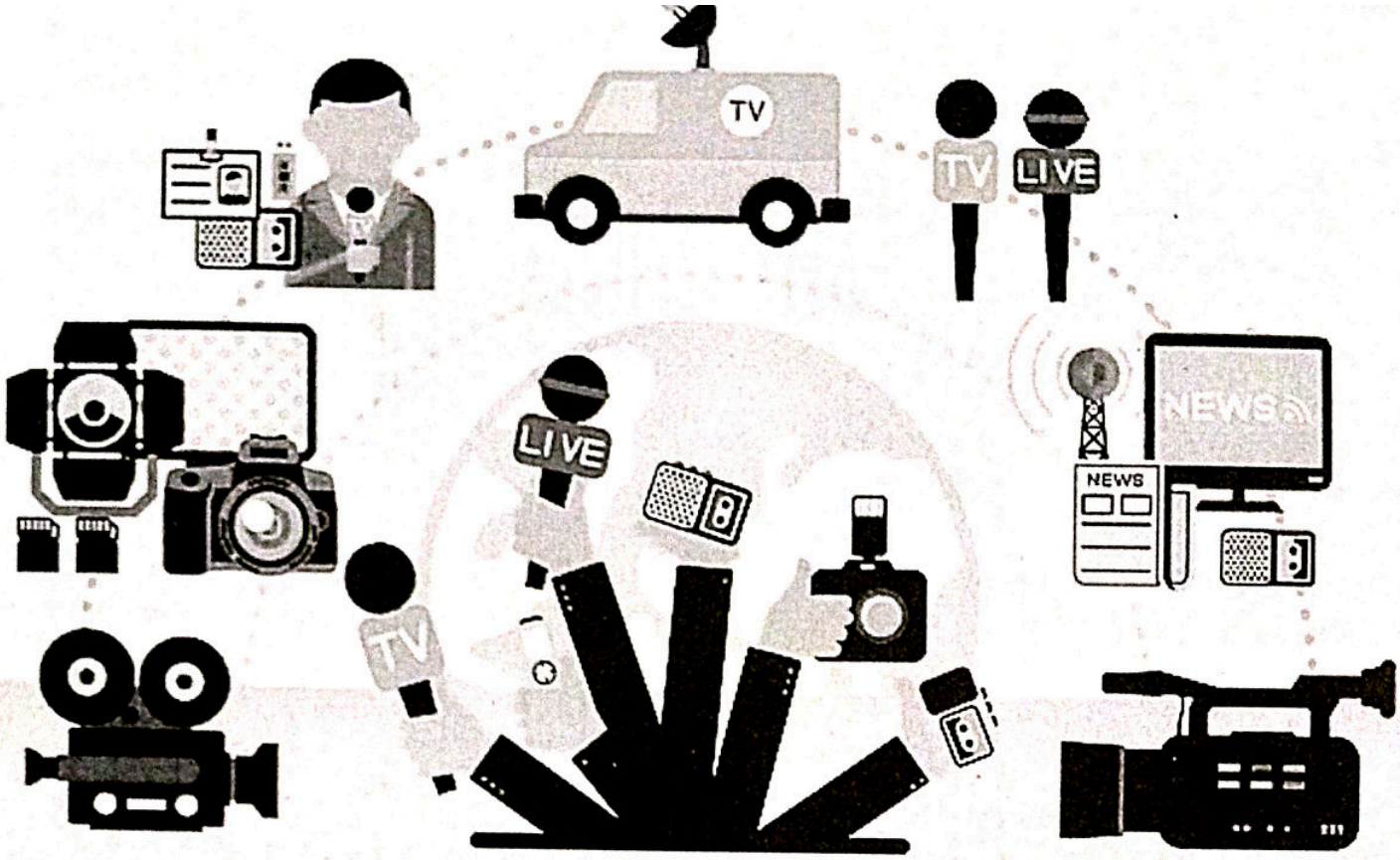

पूंजीवादी साम्राज्यवाद और मीडिया ?

चिंतन



फ़हीमुद्दीन अहमद

पूंजीवादी साम्राज्य अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिन संसाधनों को इस्तेमाल करता है, उनमें मीडिया सबसे शक्तिशाली संसाधन है। आज दुनिया भर के प्रसार माध्यम कुछ मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथ में हैं। आज स्थिति यह है कि पूरी दुनिया की मीडिया पर 10 से भी कम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का क़ब्ज़ा है। आज का कॉरपोरेट मीडिया अपने स्वामियों और पूंजीनिवेशकों के हितों की रक्षा करने के लिए अन्याय और झूठ से काम लेकर वास्तविकताओं और घटनाओं को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करता है। महत्वहीन जानकारियों को महत्वपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करता है और कभी-कभी तो बिल्कुल निराधार और ग़लत ख़बरें फैलाई जाती हैं, और इन सबका उद्देश्य मात्र पूंजीवादी साम्राज्य के हितों की सुरक्षा है।

आज मीडिया जनता की सेवा के बजाय मुट्ठी भर पूंजीपतियों की सेवा में लगा हुआ है। कॉरपोरेट मीडिया के लिए जनता की वास्तविक समस्याओं का कोई महत्व नहीं है। अगर वे इनके लिए आर्थिक लाभ का कारण नहीं बनते हों तो उन समस्याओं के लिए उनके पास कोई स्थान नहीं है। वे समाचार जो एक लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक हैं, जो उसके नागरिकों को समाज की भलाई और समाज कल्याण के लिए काम करने पर प्रेरित करते हैं, कॉर्पोरेट मीडिया उनसे आंखें मूंद लेता है, ताकि महत्वहीन, सनसनीख़ेज़ और नैतिक बिगाड़ उत्पन्न करने वाले समाचारों को स्थान मिल सके।

पूंजीवादी साम्राज्यवाद की दृष्टि में इस समय उनके मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट इस्लाम और मुसलमान हैं। इसलिए मीडिया में मुसलमानों के बारे में प्रस्तुत किए जाने वाले समाचार और विश्लेषण पक्षपात से मुक्त नहीं होते। इस्लाम को हिंसा का ध्वजावाहक और मुसलमानों को आतंकवादी साबित करने का कोई मौक़ा मीडिया अपने हाथ से जाने नहीं देता। दुनिया में कहीं भी कोई हिंसक घटना होती है, तो घटना की सच्चाई चाहे कुछ भी हो, अख़बार या टीवी के माध्यम से बिना किसी प्रमाण या छान-बीन के उसका आरोप किसी

मुस्लिम ग्रुप पर रख दिया जाता है, और उसी मिथ्या के आधार पर अत्यन्त झूठी कहानियां बनाई जाती हैं।

यह साम्राज्यवादी मीडिया का ही कारनामा है कि अपनी मातृभूमि पर शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करने वाले फ़िलिस्तीनियों को आतंकवादी बताया जाता है और अत्याचारी इसराईल को शांतिपूर्ण देश ठहराया जाता है। इराक़ पर हमले के ज़रिये से मध्य-पूर्व के तेल भंडारों पर क़ब्ज़ा करने के लिए सद्दाम हुसैन के व्यक्तित्व को अमेरिका, पश्चिमी दुनिया, लोकतंत्र और मानवता का शत्रु प्रसिद्ध किया गया।

बंगलादेश की तस्लीमा नसरीन एक साधारण-सी लेखिका है, जिसकी रचनाओं का कोई स्तर नहीं है। उसका उपन्यास "लज्जा" भी साहित्यिक दृष्टि से एक घटिया उपन्यास है, लेकिन मीडिया ने जिस प्रकार उसका प्रचार किया और उसे विचार अभिव्यक्ति और ज्ञान की स्वतंत्रता की हीरोइन बनाकर प्रस्तुत किया, इससे मीडिया की मानसिकता का पता चलता है।

मनोरंजन मनुष्य की स्वाभाविक आवश्यकता है, लेकिन पूंजीवादी साम्राज्यवाद की सेवक कॉरपोरेट मीडिया के माध्यम से मनोरंजन के नाम पर जो कुछ परोसा जा रहा है उसके कारण मनुष्य मानवता के शिखर से गिरकर पशु बनता जा रहा है। यदि यह मनोरंजन मनुष्य को मानवता के स्थान से गिरा दे तो फिर यह मनोरंजन नहीं, पीड़ा है।

इस क्षेत्र में समाचार पत्र, पत्रिका, टीवी चैनल, रेडियो, फ़िल्म और इन्टरनेट सभी प्रसार माध्यम पूरी तरह लगे हुए हैं और मनोरंजन के नाम पर वह सब कुछ परोस रहे हैं, जिसे एक सभ्य समाज कदापि सहन नहीं कर सकता था, लेकिन धीरे-धीरे समाज को इसका आदी बनाया गया और अब उसकी गम्भीरता का अनुभव करने वाले भी कम से कम होते जा रहे हैं।



वर्तमान कॉरपोरेट मीडिया के लिए मुख्य चीज़ विज्ञापन ही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन में 1,50,000 विज्ञापन देखता है। कई बार दैनिक समाचार पत्रों का पृष्ठ पूरा का पूरा विज्ञापन पर आधारित होता है। विज्ञापन देने वाली कम्पनियों के दबाव में कार्यक्रमों की रूप-रेखा भी उनकी मर्ज़ी के अनुसार तैयार की जाती है।

विज्ञापन का सबसे आपत्तिजनक पहलू यह है कि इसमें महिला का प्रयोग अत्यधिक और अत्यन्त ग़लत तरीक़े से किया जाता है। पूंजीवादी साम्राज्यवाद ने महिला का जिस प्रकार शोषण किया है उसके जीवित उदाहरण ये विज्ञापन हैं। वस्तु चाहे पुरुषों के प्रयोग की हो या महिलाओं के प्रयोग की, रसोई घर का सामान हो या स्नान घर के टाइल्स, प्रत्येक विज्ञापन में महिला की उपस्थिति अनिवार्य होती है। इन विज्ञापनों से सबसे अधिक प्रभावित बच्चे होते हैं।

आदर्श दृष्टिकोण

यह बात स्पष्ट रहे कि प्रसार माध्यम अपने आप में ग़लत या बुरे नहीं हैं, बल्कि इन पर इस समय जिन शक्तियों का क़ब्ज़ा है वे इसका ग़लत प्रयोग कर रहे हैं। जिस प्रकार जीवन के सभी मामलों में इस्लाम धर्म ने मनुष्य का मार्गदर्शन किया है, उसी प्रकार मीडिया के क्षेत्र में भी यह दीन (धर्म) मनुष्य के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध करता है। क़ुरआन व हदीस और इस्लामी शिक्षाओं के अध्ययन से हमें वर्तमान में इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन मिलता है।

नीचे उन बातों की ओर संकेत

यह साम्राज्यवादी मीडिया का ही कारनामा है कि अपनी मातृभूमि पर शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करने वाले फ़िलिस्तीनियों को आतंकवादी बताया जाता है और अत्याचारी इसराईल को शांतिपूर्ण देश ठहराया जाता है। पूंजीवादी साम्राज्यवाद की सेवक कॉरपोरेट मीडिया के माध्यम से मनोरंजन के नाम पर वह सब कुछ परोस रहे हैं, जिसे एक सभ्य समाज कदापि सहन नहीं कर सकता था, लेकिन धीरे-धीरे समाज को इसका आदी बनाया गया और अब उसकी गम्भीरता का अनुभव करने वाले भी कम से कम होते जा रहे हैं।



किया जा रहा है जिन पर चलने से मीडिया निस्सन्देह मानवता की भलाई व कल्याण, शान्ति और ख़ुशहाली और विकास और कामयाबी का एक महत्त्वपूर्ण ज़रिया बन सकता है।

जैसा कि आरम्भ में कहा गया कि मीडिया का मौलिक उद्देश्य लोगों को जानकारी उपलब्ध कराना, उनकी मानसिकता का निर्माण करना और उनको मनोरंजन उपलब्ध कराना है। इन तीनों कामों की पूर्ति के लिए इन नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

(1) समाचार का सही होना

समाचारों और जानकारियों का प्रसारण सच्चाई और वास्तविकता के आधार पर होना चाहिए। कोई ऐसा समाचार न फैलाया जाए जिसके सही और सच्चा होने में सन्देह हो। झूठी बातें और अफ़वाहें न फैलाई जाएं। सच्चाई की खोजबीन की जाए। क़ुरआन में है–

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अगर कोई फ़ासिक (दुराचारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी समूह को अनजाने में नुक़सान पहुंचा बैठो और फिर अपने किए पर पछताओ।" (49:6)

(2) सत्य को न छुपाया जाए

इस सम्बन्ध में यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि न केवल सही समाचार ही प्रसारित किए जाएं और झूठी अफ़वाहें न फैलाई जाएं, बल्कि सत्य को छिपाने से भी बचा जाए। इसमें यह भी शामिल है कि आदमी सच्चाई को तोड़-मरोड़ कर न पेश करे और न लोगों के लिए सच्चाई को संदिग्ध बना दे। क़ुरआन में है–

"और असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जानते-बूझते सत्य को छिपाने का प्रयास करो।" (2:42)

इस आयत के द्वारा मीडिया में की

जाने वाली ऐसी सभी गतिविधियों से रोका गया है, जिसके द्वारा मूल घटना या किसी के बयान को बदल कर उसके कुछ के कुछ मानी पहनाकर और उसे तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है।

(3) न्याय और निष्पक्षता

किसी घटना या बयान की ख़बर देने में पूरे न्याय से काम लिया जाए, किसी भी तरह का रंग चढ़ाने, टिप्पणी और पक्षपात से बचा जाए। किसी भी हालत में न्याय का साथ न छोड़ा जाए। किसी का प्रेम या शत्रुता न्याय की बात कहने से न रोक दे। क़ुरआन कहता है–

"और जब बात कहो, न्याय की कहो चाहे मामला अपने सम्बन्धियों का ही क्यों न हो।" (6:152)

"किसी समूह की शत्रुता तुम्हें इतना उत्तेजित न कर दे कि तुम न्याय से फिर जाओ। न्याय करो यह परहेज़गारी (ईशपरायणता) से क़रीब है।" (5:8)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न्याय के ध्वजावाहक बनो और ख़ुदा-वास्ते के गवाह बनो, चाहे तुम्हारे न्याय और तुम्हारी गवाही के नीचे तुम स्वयं या तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धी ही क्यों न आ जाएं। दूसरा पक्ष चाहे अमीर हो या ग़रीब, अल्लाह तुम से अधिक उनका शुभचिन्तक है। अतः अपनी इच्छाओं की पैरवी में न्याय से न रुको। और अगर तुमने लगी-लिपटी बात कही या सच्चाई से पहलू बचाया, तो जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।" (4:135)

(4) बुराई और निर्लज्जता का प्रसार-प्रचार न किया जाए

अश्लीलता, नग्नता और बुराई का प्रसार-प्रचार आदि इस्लाम की दृष्टि में समाज सुधार और मनुष्य के चरित्र निर्माण के लिए विष है। यह मनुष्य के नैतिक स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त घातक है। क़ुरआन में है–

"और बेशर्मी की बातों के क़रीब भी न जाओ चाहे वे खुली हों या छिपी।" (6:151)

"(ऐ मुहम्मद)! उनसे कहो, मेरे रब ने बेशर्मी के काम हराम किए हैं चाहे वे खुले हों या छिपे।" (7:33)

(5) पवित्र और उच्च उद्देश्य

मीडिया के माध्यम से लोगों को उच्च उद्देश्य के लिए काम पर उभारा जाए। ऐसी चीज़ें न पेश की जाएं जिससे मानवता का कोई भला न हो और जिसमें पड़कर मनुष्य अल्लाह से, उसके आदेशों से और लोगों के अधिकारों से ग़ाफ़िल हो जाए। अल्लाह अपनी किताब क़ुरआन में फ़रमाता है–

"और इन्सानों में कोई ऐसा भी है, जो अल्लाह से ग़ाफ़िल करने वाली बातें ख़रीदता है, ताकि बे-समझे-बूझे (दूसरों को) पथभ्रष्ट करे और उस राह की हंसी उड़ाए। ऐसे ही लोगों के लिए रुसवाई का अज़ाब है।" (31:6)

अगर ऊपर वर्णित नियमों के अनुसार मीडिया का गठन हो तो यही मीडिया बड़ा ही उपयोगी और समाज के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है। जीवन के अन्य क्षेत्रों की भांति इस क्षेत्र में भी इस्लाम का मार्गदर्शन बिल्कुल स्पष्ट है। इसके प्रकाश में मुसलमान अन्य समुदायों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। ख़ुद इस्लाम के लिए भी इन प्रसार माध्यमों का प्रयोग आवश्यक है। इसलिए हमें अपने अन्दर इसके सही प्रयोग की क्षमता उत्पन्न करना अतिआवश्यक है। साथ ही साथ कॉरपोरेट मीडिया के प्रभाव से स्वयं को और जनता को सुरक्षित रखने की भरपूर कोशिश भी की जानी चाहिए। ■■



मानवता का मुकुट

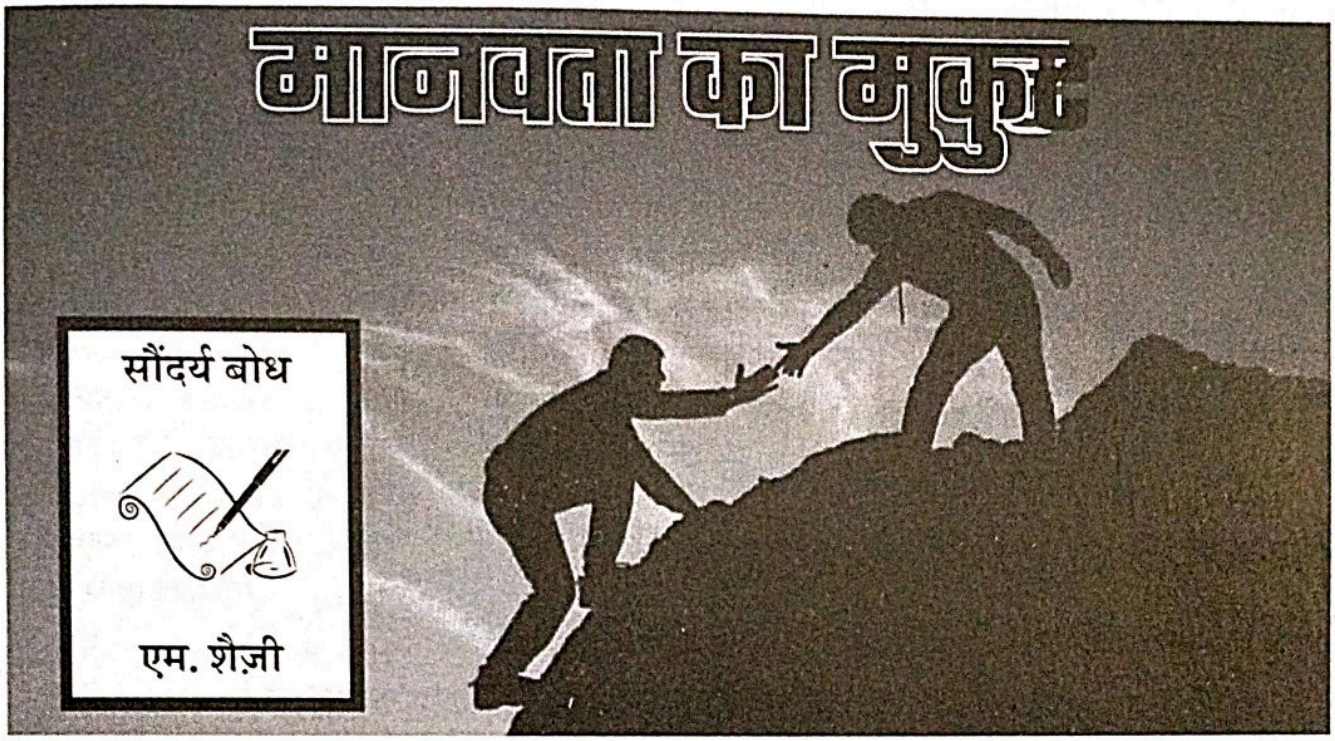

सौंदर्य बोध

एम. शैज़ी

मनुष्य सामाजिक प्राणी है वह समाज में अन्य लोगों के साथ रहता है, उसका वास्ता हर समय भिन्न-भिन्न प्रकार एवं स्वभाव वाले लोगों से पड़ता है, फलस्वरूप सद्व्यवहार व सभ्यता का परिचय दे तो वह अच्छे चरित्र का स्वामी अर्थात् नैतिक व्यक्ति कहलाएगा। इसके विपरीत यदि उसका व्यवहार बुरा होगा तो निश्चित रूप से उसकी पहचान समाज में अनैतिक चरित्र के लोगों में होगी। नैतिक व्यवहार का संबंध जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से है। व्यक्ति जहां भी हो और जिस हाल में भी हो समाज में उसको इन दोनों में से किसी एक व्यवहार को अपनाना पड़ता है। उस समय उसके व्यवहार से ही पता चलता है कि वह नैतिक चरित्र का व्यक्ति है या अनैतिक चरित्र का इन्सान है।

नैतिकता वास्तव में उच्च मानवीय सिद्धांत एवं विशेषता का नाम है, जिसके लिए अनिवार्य है कि वह जहां भी हो, जिस हाल में भी हो, एक पक्षीय रूप में नैतिकता के सिद्धांत पर जमा रहे। वह परिवार में भी और समाज में भी नैतिकता का प्रदर्शन करे, किसी देश, राज्य, संस्था का पदाधिकारी हो या सेवक, अध्यापक हो या विद्यार्थी, व्यापारी हो या ग्राहक, किसान हो या मज़दूर उसे हर हैसियत में अपने नैतिक गुण का प्रदर्शन करना है। उसे मित्रता में भी और शत्रुता में भी, सुख के समय में भी और दुख के दौर में भी, क्रोध के अवसर पर भी और सामान्य हालत में भी, सहमति और असहमति दोनों दशाओं में अपनों के बीच में भी और अपरिचित एवं ग़ैरों के बीच भी व्यवहार में नैतिकता का परिचय देना है।

सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मनुष्यों के लिए इस सृष्टि में उसकी तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति का सामान पैदा करके उसके प्रयोग करने के नियम भी बताए हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के साथ-साथ आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के नियम के क़ानून भी बताये ताकि मानव समाज सुख और शांति के साथ जीवन गुज़ार सके।

वर्तमान दौर अधर्म और भौतिकता का युग है, जिसमें मनुष्यों को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है और यहां कथित स्वतंत्रता समाज में अनैतिकता की जड़ है। ईशमय और परलोक में अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग-नरक भोगने के विश्वास के कमज़ोर होने या उसको मात्र कल्पना समझने की धर्म विरुद्ध भावना ने मानव समाज में उपद्रव पैदा कर दिया है। पश्चिमी विचारधारा ने धर्म को मात्र व्यक्तिगत बताते हुए उसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था से अलग बताकर मानवीय समाज को गन्दगी एवं

समस्याओं की ऐसी दलदल में फंसा दिया है कि वह जितना प्रयास उसमें निकलने के लिए करता है उतना ही ज़्यादा दलदल की गहराई में उतरता चला जाता है। सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मनुष्यों के लिए इस सृष्टि में उसकी तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति का सामान पैदा करके उसके प्रयोग करने के नियम भी बताए हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के साथ-साथ आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के नियम के क़ानून भी बताए ताकि मानव समाज सुख और शांति के साथ जीवन गुज़ार सके।

समस्त कालों एवं युगों के ज्ञाता ईश्वर की दृष्टि में समस्त मानव बराबर हैं। वह इन्सानों को तमाम भौतिक आंतरिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं से परिचित है। वह विचार, क्षेत्र, भाषा, नस्ल, वर्ग आदि तमाम पक्षपातों से मुक्त है। वह समस्त मनुष्यों का हितैषी है, वह मनुष्यों की बाहरी और आंतरिक आवश्यकताओं का ज्ञाता है। इसलिए ईश्वरीय विधान ही मानव के सर्वांगीण, भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास और समस्त आवश्यकताओं की निष्पक्ष और न्यायसंगत आपूर्ति के लिए पर्याप्त है।

मानव ज्ञान एवं बुद्धि सीमित है, वह अतीत से बेख़बर वर्तमान के सीमित ज्ञान और भविष्य से तो पूर्णतः अनभिज्ञ है। विश्व के किसी भी देश में आज तक कोई ऐसा मानव निर्मित विधान नहीं बनाया जा सका, जिसमें उसके रचनाकारों के विचार, भावना, प्रेम एवं घृणा का समावेश न हो, जिसमें भौतिक आवश्यकताओं के साथ-साथ आंतरिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की प्राप्ति के अवसर मौजूद हों, जिसमें सबको समान अधिकार, सम्मान व निष्पक्ष न्याय मिलता हो, जिसमें सबको बिना किसी भेदभाव के जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होती हों, जिसमें योग्यता के अनुसार सबको रोज़गार तथा सेवा के अवसर प्राप्त हों। वास्तविकता तो यह है कि आज की दुनिया में स्वतंत्रता, समानता, निष्पक्षता और समान न्याय के नारे तो ज़रूर लगाये जाते हैं, लेकिन उसका व्यावहारिक रूप कहीं भी किसी भी स्तर पर देखने को नहीं मिलता।

मनुष्य को ईश्वर से समीप होने के लिए जिस गुण की आवश्यकता होती है वह तक़वा (ईशपरायणता) अर्थात प्रभू के डर और उसके प्रेम में हर बुराई को त्यागना और तमाम भलाइयों को ग्रहण करना है और मनुष्यों के प्रति उसे जिस चीज़ की आवश्यकता है वह नैतिकता है। इन्हीं दोनों विशेषताओं के संगम से मानवता वजूद में आती है। ये दोनों विशेषताएं एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ी हैं।

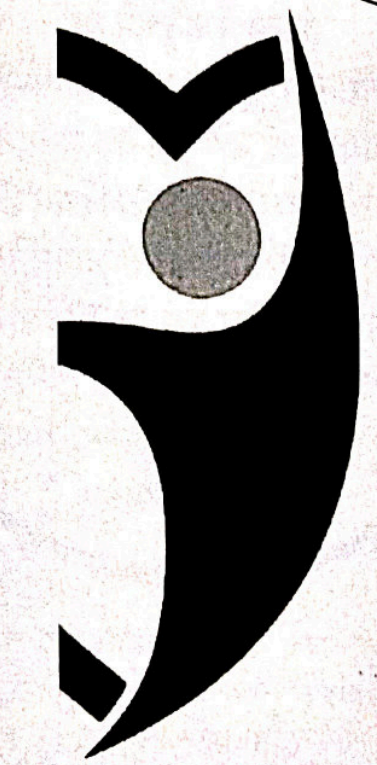

क्योंकि नैतिकता का मूल आधार एवं स्रोत केवल धर्म है। अच्छे और बुरे की समझ अर्थात् नैतिकता के गुण को ईश्वर ने मनुष्य की अंतरात्मा में निहित कर दिया है। मनुष्य अपनी अंतरात्मा पर स्वयं समझ रखता है (कि उसने बुरा कर्म किया है या अच्छा) हालांकि वह अपने ऊपर विभिन्न प्रकार के बहानों के पर्दे डाल देता है। भलाई वह है, जिससे मन और अंतरात्मा में सकून पैदा हो और बुराई या पाप वह है जो मन में खटके और अंतरात्मा को विचलित कर दे, चाहे लोग तुझे उस कर्म का करना वैध

ही क्यों न बताएं।

इन्सान अपने कर्म का ज़िम्मेदार स्वयं है। भौतिकता एवं अधार्मिकता के इस युग में नैतिकता के मार्ग पर चलना असंभव तो नहीं, लेकिन अत्यंत कठिन ज़रूर है। नैतिकता के कटीले मार्ग पर दृढ़ता के साथ चलने और उस पर जमे रहने के लिए एकमात्र सूरत यही है कि व्यक्ति हर समय और हर हाल में यह समझता रहे कि उसका हर कर्म चाहे उसने अकेले में या अंधेरे में किया हो या सार्वजनिक रूप से किया हो, सर्वव्यापी व सर्वदर्शी प्रभु की दृष्टि में है, उसे अपने प्रत्येक कर्मों का ही नहीं अपने मन-मस्तिष्क में पैदा होने वाले विचारों तक का हिसाब देना है, अंतरयामी ईश्वर उसके तमाम कर्मों और विचारों से परिचित है। निश्चित रूप से यह अटूट विश्वास मनुष्य में आत्मनियंत्रण की भावना का जागृत करके उसको हर हाल में स्वयं को नैतिकता के सिद्धांत एवं मार्ग पर दृढ़ रखने का पाबन्द बनाने में सहायक सिद्ध होगा और उसे उच्च व्यक्तित्व के रूप में निर्मित करेगा और एक आदर्श के रूप में समाज में उसकी पहचान बनाएगा।

ईश्वर के प्रति उत्तरदायी जीवन का एहसास ही मनुष्य को नैतिकता के श्रेष्ठतम स्थान पर आसीन कर मनुष्य के चरित्र और कर्म को आदर्श रूप प्रदान करता है। यह विश्वास जितना मज़बूत होगा, उतना ही लोगों के प्रति उसका व्यवहार नैतिकता के गुण से सुशोभित होगा।

मनुष्य को ईश्वर से समीप होने के लिए जिस गुण की आवश्यकता होती है वह तक़वा (ईशपरायणता) अर्थात् प्रभू के डर और उसके प्रेम में हर बुराई को त्यागना और तमाम भलाइयों को ग्रहण करना है और मनुष्यों के प्रति उसे जिस चीज़ की आवश्यकता है वह नैतिकता है। इन्हीं दोनों विशेषताओं के संगम से मानवता वजूद में आती है। ये दोनों विशेषताएं एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ी हैं। जहां तक़वा होगा, वहां नैतिकता होगी और जहां नैतिकता होगी वहां तक़वा भी निश्चित रूप से मौजूद होगा। एक चीज़ का न होना स्वयं में यह प्रमाणित करता है कि दूसरी चीज़ भी वहां मौजूद नहीं है।

■■

❊ अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि वो तुम्हें बुलाते हैं उस चीज़ की तरफ जिसमें तुम्हारे लिए ज़िंदगी है। (क़ुरआन) ❊ उस शख़्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ। (क़ुरआन)



हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी-इल्मी, फिक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला(अध्ययन)कीजिए

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	400/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

मुहम्मद शहज़ाद (उत्तर प्रदेश), मोबाइल नं। : 9808080806

अतः सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है
जो आकाशों का रब और धरती का रब,
सारे संसार का रब है।
आकाशों और धरती में बड़ाई उसी के लिए
है, और वही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त
तत्वदर्शी है।

(क़ुरआन, 45:36, 37)



with best
compliment
from

JB. Sadre Alam [CA]
Delhi



पर्यावरण के रण में टूट रहा धरती का धैर्य

मुख्य स्तम्भ

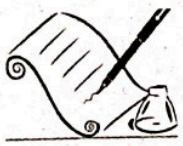

सुफ़ियान अहमद

हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है ताकि पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके और लोग उनसे निपटने के लिए ठोस क़दम उठाने के लिए प्रेरित हो सकें। लोगों को पर्यावरण से जुड़े उन मुद्दों के बारे में पता होना चाहिए, जो आने वाले समय में एक बड़ा ख़तरा बनने जा रहे हैं।

यह सर्वविदित है कि पर्यावरण संकट के चलते मानव के सामने अनगिनत समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हो गई हैं, लेकिन जिन कारणों से ये समस्याएं पैदा हो रही हैं, उन कारणों को जानते हुए भी उन्हें ख़त्म करना कठिन हो गया है। ग़ौरतलब है कि इन कारणों में ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस गैसों का लगातार बढ़ते जाना और प्राकृतिक संसाधनों का मनमाना दोहन प्रमुख है। वैज्ञानिकों के मुताबिक़ ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभाव की वजह से मानसून बनने की परिस्थितियों पर असर पड़ा है। बरसात का लगातार कम होना इस बात

का संकेत है कि अगर इसी तरह वर्षा कम होने का क्रम बना रहा, तो आने वाले कुछ दशकों में बरसात की जगह अकाल ले सकता है।

महासागर हों या पहाड़, नदियां हों या खेती की ज़मीन सब जगह प्रकृति कराह रही है। प्रकृति के प्रतिकूल मानव गतिविधियों के कारण पृथ्वी हांफने लगी है। उसकी ऐसी हालत किसी के भी हित में नहीं है। आने वाले कुछ वर्षों में इससे विश्व स्तर पर भुखमरी, तरह-तरह की बीमारियां, जंगलों और हरियाली का विनाश, भूजल स्तर के नीचे जाने, पीने के पानी की क़िल्लत सहित अनगिनत समस्याओं और संकटों से विश्व को सामना करना पड़ सकता है।

पर्यावरण का संकट यूं तो दुनिया भर में जारी है, लेकिन चिंता के पायदान पर हमारे देश की दशा बेहद गंभीर है। हाल ही में जारी विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट-2023 के अनुसार, बिगड़ती हवा के मामले में भारत 134 देशों की सूची में तीसरे नंबर पर है। दुनिया की पांचवीं बड़ी आर्थिक ताक़त बनकर उभरे भारत में हवा की यह दुर्दशा चिंतित करती है। आने वाले समय में जब देश विकसित होगा, उस स्थिति में यहां हवा की स्थिति की बस कल्पना ही कर सकते हैं।

पर्यावरण वह जूं है, जो राजनीति के कान पर कभी रेंग ही नहीं पाती। तीन दशक से यह साफ़ है कि हमारे शहरों की हवा सांस लेने लायक नहीं है। मगर राजनीति इस समस्या को नज़रंदाज़ करने के नित नए तरीक़े ढूंढ़ती रही है। इसलिए यह माना जा सकता है कि हालिया रिपोर्टों का भी इस पर शायद ही असर हो। हवा-पानी और मिट्टी-जंगल के सवाल राजनीति में गौण होते गए हैं।

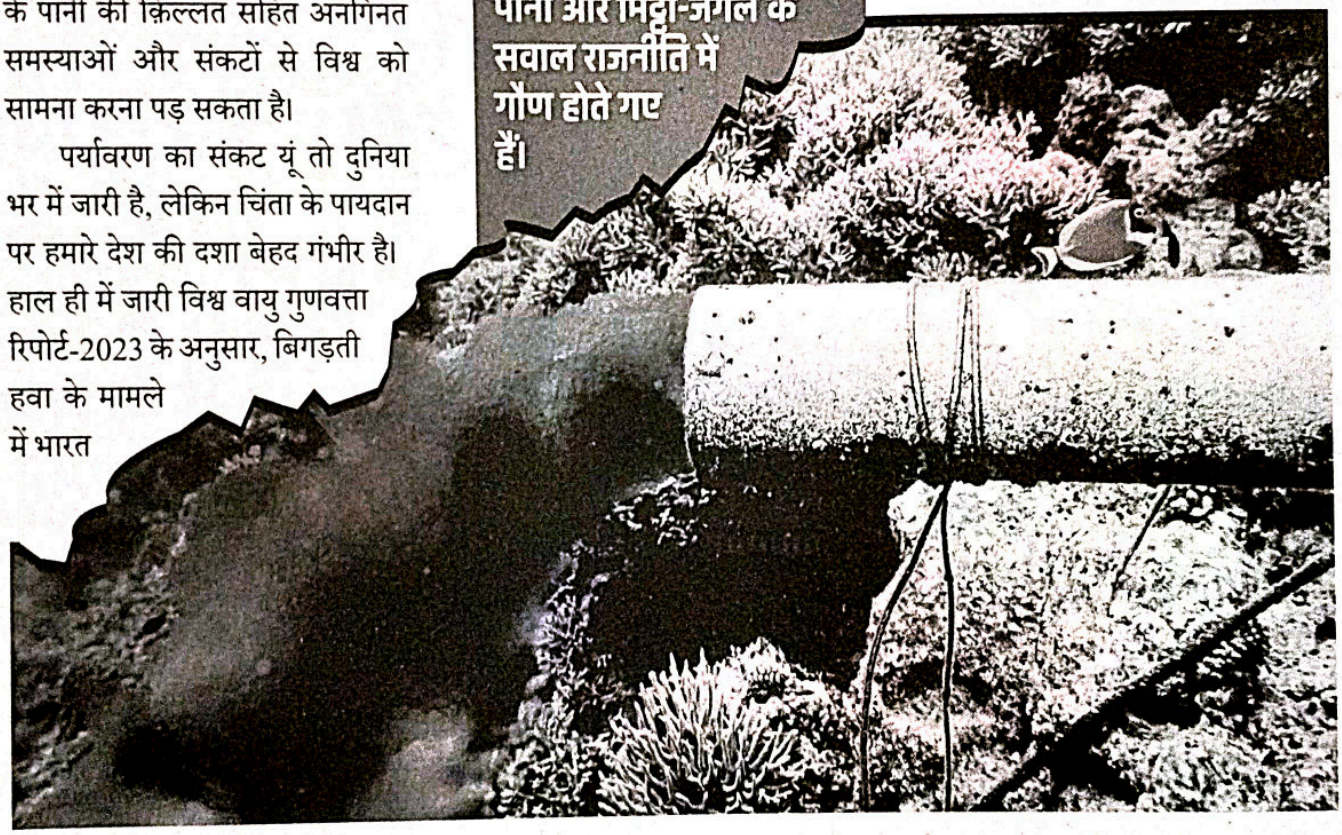

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हवा में पीएम (पार्टिकुलेट मेटर) 2.5 सांद्रता पांच माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर होनी चाहिए, लेकिन अपने देश में इसका स्तर 10 गुना ज़्यादा यानी 50 के ऊपर पाया गया है। देश के 96 प्रतिशत लोग इस बुरी हवा की चपेट में हैं। दिल्ली दुनिया में सबसे प्रदूषित राजधानी पाई गई है। यहां पीएम 2.5 का स्तर 102 है। दुनिया में सबसे प्रदूषित शहर भी अपने ही देश में पाया गया है। इसमें बेगूसराय शीर्ष पर है। इस प्रकार दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में 80 शहर अपने ही देश में हैं। ज़ाहिर है अपने देश में कोई भी शहर अब शुद्ध हवा पानी में नहीं जीता।

जैसे हालात बन रहे हैं उससे आने वाले दिनों में हालात और बदतर होने की पूरी संभावना है। वायु गुणवत्ता की उपेक्षा की समस्या एक व्यापक राष्ट्रीय मुद्दा है, लेकिन पर्यावरण वह जूं है, जो राजनीति के कान पर कभी रेंग ही नहीं पाती। तीन दशक से यह साफ़ है कि हमारे शहरों की हवा सांस लेने लायक़ नहीं है। मगर राजनीति इस समस्या को नज़रंदाज़ करने के नित नए तरीक़े ढूंढ़ती रही है। इसलिए यह माना जा सकता है कि हालिया रिपोर्टों का भी इस पर शायद ही असर हो।

हवा-पानी और मिट्टी-जंगल के सवाल राजनीति में गौण होते गए हैं। हमारे सारे मूल्य अर्थशास्त्र से आने लगे हैं। हर चीज़ का मूल्य मुद्रा के रूप में बिकाऊ है। यही है विकास

की सच्चाई। औद्योगिक क्रांति और आर्थिक विकास के इतिहास का सच नकारे बिना राजनीति की दाल गल नहीं सकती। विकास की असलियत डरावनी है। वनों को काटकर खनिज निकालना, पवित्र नदियों पर बांध बनाकर उनका पानी निचोड़ना, उनमें अपना अपशिष्ट पदार्थ डालना, खेतिहर ज़मीन को बंजर बनाना, वन्य प्राणियों का जड़-मूल मिटा देना। प्रकृति के साधनों को डकारकर कचरा पैदा करना विकास का स्वभाव शुरू से रहा है। जो देश इस विध्वंसक अमीरी को साध लेते हैं, वे ख़ुद को साफ़ कर लेते हैं।

पिछले दो सौ वर्षों में औद्योगिक क्रांति के औज़ारों ने इसे इतना बढ़ा दिया है कि पर्यावरण का विनाश चारों ओर व्याप्त हो चुका है। उसका ज़हर हर सांस के साथ हमारे भीतर जाता है, भोजन के हर निवाले में उसका विष है। इसे ठीक करने में राजनीति को कोई लाभ नहीं दिखता। वह सिर्फ़ अगले चुनाव तक देखती है। सत्य और दूरदृष्टि की उसे कोई ज़रूरत नहीं लगती।

जो हालात बिगड़ चुके हैं, वे सही प्रबंधन के अभाव में और भी बदतर होंगे, ऐसे में सोचना होगा कि हम मात्र जहान बचाने की ही चिंता न करें, साथ में अपनी जान बचाने के लिए भी गंभीर हों। विकसित बनने के साथ स्वच्छ एवं सुंदर रहना भी हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

अभी समय है चेतने का, सुधरने का और उपभोक्तावाद पर लगाम लगाने का। अगर हम अब भी नहीं चेते तो संकट इतना गंभीर हो सकता है कि उससे निपटना मुश्किल हो जाए। धरती को बचाने के उपाय अमल में लाने में पहले ही देर हो चुकी है। सरकारों के साथ समाज को भी यह समझना होगा कि आधुनिक जीवनशैली में बदलाव लाए बिना बात बनने वाली नहीं है। हमें



भौतिकतावादी जीवन छोड़ना होगा। खाने-पीने की चीज़ों की बर्बादी रोकनी होगी और बिजली-पानी का किफ़ायती उपयोग करना सीखना होगा। हमें यूज एंड थ्रो संस्कृति का परित्याग करना होगा।

जलवायु परिवर्तन संबंधी क़दम केवल किसी एक देश की चिंता का विषय नहीं हो सकते, इनके लिए वैश्विक सहयोग और क़दमों की ज़रूरत है। यह

जो हालात बिगड़ चुके हैं, वे सही प्रबंधन के अभाव में और भी बदतर होंगे, ऐसे में सोचना होगा कि हम मात्र जहान बचाने की ही चिंता न करें, साथ में अपनी जान बचाने के लिए भी गंभीर हों। विकसित बनने के साथ स्वच्छ एवं सुंदर रहना भी हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

संभव नहीं कि कुछ लोग तो जीवनशैली बदलें और शेष लोग यह मानकर चलते रहें कि उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं। यह सोच भी सही नहीं कि जलवायु परिवर्तन रोकने की ज़िम्मेदारी पर्यावरण संगठनों और सरकारों की है।

सरकारें और पर्यावरण संगठन तभी कुछ हासिल कर पाएंगे, जब लोग भी उनका सहयोग करने के लिए तत्पर होंगे। यह तत्परता सभी को दिखानी होगी-उन्हें कुछ अधिक, जो एसी, लक्जरी कारों, विमानों आदि का प्रयोग अधिक करते हैं। धरती की रक्षा में उसके संसाधनों का अधिकाधिक उपभोग करने वालों की ज़िम्मेदारी अधिक है। ज़रूरी है कि राज्य, सरकार और संगठन के स्तर पर हर व्यक्ति पर्यावरण की देखभाल को अपना फ़र्ज़ समझे। ■■

कान्ति के वे सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।

अभिमत

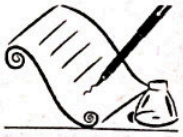

मनीष कुमार चौधरी



तपती धरती और बढ़ती दुश्वारियां

यह वर्ष गर्मी के कीर्तिमान तोड़ रहा है। दुनिया के कई हिस्से अभूतपूर्व गर्मी की चपेट में हैं। इसमें दक्षिणी गोलार्ध-जहां गर्मी होती है, और उत्तरी गोलार्ध-जहां सर्दी होती है, दोनों शामिल हैं। जापान, केन्या, नाइजीरिया, ब्राजील, थाईलैंड, आस्ट्रेलिया और स्पेन में पिछले कुछ हफ़्तों में अत्यधिक तापमान रहा। औसत बीस डिग्री तापमान वाले देशों में 45 डिग्री तक तापमान पहुंच जाना किसी त्रासदी से कम नहीं है। यहां तक कि महासागरों का तापमान भी पहले कभी इतना नहीं देखा गया। यह तीव्र तूफ़ानों को बढ़ावा दे सकता है। अगर वर्तमान स्थितियां 2023 की मौसम संबंधी चरम स्थितियों की प्रतिध्वनि लगती हैं, तो इसलिए कि उनके पीछे कई कारक यथावत बने हुए हैं।

दुनिया अब भी अलनीनो की चपेट में है, जो प्रशांत महासागर के तापमान चक्र का गर्म चरण है। अलनीनो दुनिया भर में गर्मी को बढ़ाता है, ख़ासकर नवंबर और मार्च के बीच। 'इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज' (आईपीसीसी) की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट में पाया गया है कि दुनिया पिछले आकलन के हिसाब से वर्ष 2030 तक 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक गर्म हो सकती है। आने वाले समय में भारत को न सिर्फ़ लगातार तेज़ गर्मी, बल्कि अत्यधिक वर्षा और अनिश्चित मानसून के साथ-साथ, मौसम संबंधी आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस के भीतर सीमित करना भारत जैसे देशों के लिए ज़रूरी है, क्योंकि यहां पहले ही चक्रवात, तूफान, बाढ़, सूखा और लू आदि में बढ़ोत्तरी हो रही है।

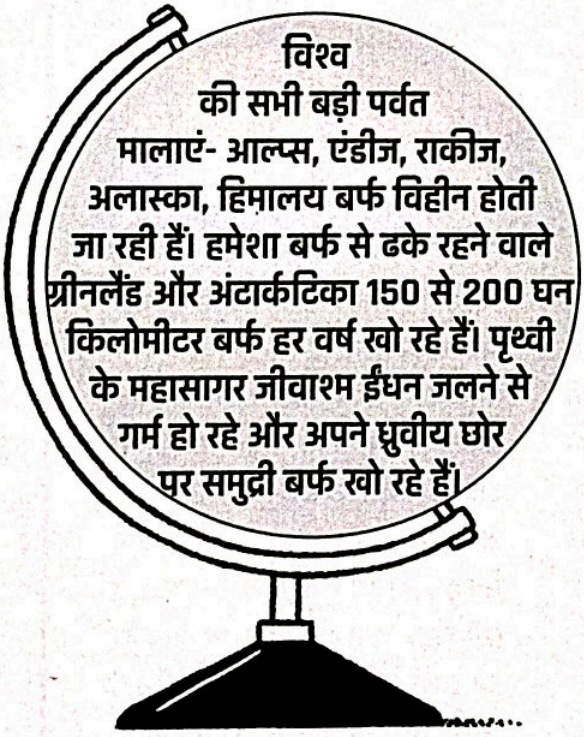

जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी का गर्म होना पूरे विश्व में या पूरे वर्ष में समान नहीं है। ध्रुवीय क्षेत्र शेष विश्व की तुलना में चार गुना तेज़ी से गर्म हो रहे हैं। पिछले वर्ष प्रकाशित पांचवीं राष्ट्रीय जलवायु आकलन रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका

के कई उत्तरी राज्यों में सर्दियां दोगुनी तेज़ी से गर्म हो रही हैं। दक्षिण में भूमि की तुलना में अधिक महासागर हैं। महासागर गर्मी को अवशोषित करते और तापमान के उतार-चढ़ाव के ख़िलाफ़ 'बफर' के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए सर्दियां आमतौर पर बहुत अधिक ठंडी नहीं होतीं और गर्मी अक्सर प्रचंड स्तर तक नहीं पहुंचती। मगर पिछले वर्ष से दुनिया के महासागर असामान्य रूप से गर्म हो गए हैं। भूमध्य रेखा के पास विश्व के महासागरों का तापमान अभी उच्च स्तर पर बना हुआ है।

ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका 150 से 200 घन किलोमीटर बर्फ़ हर वर्ष खो रहे हैं।

पृथ्वी के महासागर जीवाश्म ईंधन जलने से गर्म हो रहे और अपने ध्रुवीय छोर पर समुद्री बर्फ़ खो रहे हैं। अंटार्कटिका समुद्र और आकाश दोनों को प्रभावित करता है। जैसे-जैसे इसके चारों ओर का पानी जमता और पिघलता है, इसके ग्लेशियर समुद्र में पिघलते हैं, यह क्षेत्र समुद्री धाराओं में पोषक तत्वों के प्रवाह को बदलता और दुनिया भर में बादलों और वर्षा को आकार देता है।

शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि अगर अंटार्कटिका की सारी बर्फ़ पिघल जाए, तो इससे दुनिया भर में समुद्र का स्तर 60 मीटर से अधिक बढ़ सकता है। इधर ऊर्जा से संबंधित कार्बन डाइआक्साइड उत्सर्जन 2023 में नई ऊंचाई पर पहुंच गया। अब भी प्रति सेकेंड 1,337 टन कार्बन डाइआक्साइड (सीओटू) उत्सर्जित होने के बावजूद हम इतनी तेज़ी से उत्सर्जन में कमी नहीं कर पा रहे हैं कि जलवायु संबंधी ख़तरों को उस स्तर के भीतर रख सकें, जिससे हमारी स्वास्थ्य प्रणालियां निपट सकें।

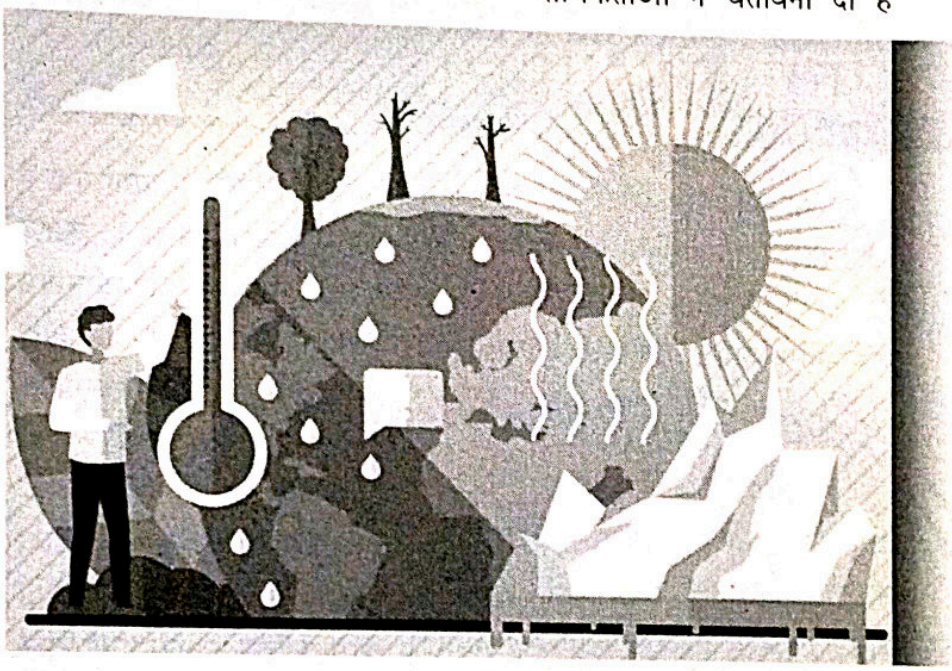

गर्मी को अवशोषित करने के अलावा, महासागर लगभग तीस फ़ीसद कार्बन उत्सर्जन को सोख लेते हैं। उच्च तापमान और अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का संयोजन पानी के रसायन को बदल रहा है। हाल के महीनों में इससे मूंगा चट्टानों जैसे नाज़ुक पारिस्थितिकी तंत्र को ख़तरा पैदा हो गया है। विश्व की सभी बड़ी पर्वत मालाएं-आल्प्स, एंडीज, राकीज, अलास्का, हिमालय बर्फ़विहीन होती जा रही हैं। हमेशा बर्फ़ से ढके रहने वाले

“समझौते में सबसे महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए देशों को 2030 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कटौती करनी है, जो सदी के मध्य तक शुद्ध शून्य तक पहुंच जाएगी। मगर हम विपरीत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के एक नए विश्लेषण के अनुसार, 2023 में ऊर्जा से संबंधित उत्सर्जन में 41 करोड़ मीट्रिक टन की वृद्धि हुई। यह लगभग एक हज़ार से अधिक नए गैस चालित बिजली संयंत्रों से होने वाले वार्षिक प्रदूषण के बराबर है।”

पश्चिमी देश इस समस्या को लेकर कितने उदासीन हैं, यह इस तथ्य से पता चलता है कि वर्ष 1750 से 2022 के बीच वायुमंडल में उत्सर्जित 1.5 लाख करोड़ मीट्रिक टन कार्बन डाइआक्साइड का लगभग 90 फ़ीसद हिस्सा यूरोप और उत्तरी अमेरिका का रहा है। आज भी एक औसत अमेरिकी हर वर्ष वायुमंडल में 14.5 मीट्रिक टन सीओटू उत्सर्जित करता है, जिसकी तुलना में एक औसत भारतीय का सालाना उत्सर्जन 2.9 मीट्रिक टन है।

अगर कुछ देश जान-बूझकर ग्रीन हाउस गैसों के साथ वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं, और परिणामस्वरूप अंटार्कटिका प्रभावित हो रहा है, तो इसके मायने यही है कि संधि प्रोटोकॉल का उसके हस्ताक्षरकर्ताओं द्वारा उल्लंघन किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र को इसके बारे में कुछ ठोस सोचना होगा। ग़ौरतलब है कि विकसित देशों के लिए शुद्ध सकल शून्य लक्ष्य हासिल करना उन पूर्व उपनिवेशों की तुलना में कहीं अधिक आसान है, जो अभी अपने औद्योगिक विकास चक्र के बीच में ही हैं। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए 2015 के पेरिस जलवायु समझौते को अपनाए हुए लगभग एक दशक हो गया है। समझौते में सबसे महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए देशों को 2030 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कटौती करनी है, जो सदी के मध्य तक शुद्ध शून्य तक पहुंच जाएगी। मगर हम विपरीत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के एक नए विश्लेषण के अनुसार, 2023 में ऊर्जा से संबंधित उत्सर्जन में 41 करोड़ मीट्रिक टन की वृद्धि हुई। यह लगभग एक हज़ार से अधिक नए गैस चालित बिजली संयंत्रों से होने वाले वार्षिक प्रदूषण के बराबर है।



अगर कुछ देश जानबूझकर ग्रीन हाउस गैसों के साथ वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं, और परिणामस्वरूप धरती का तापमान प्रभावित हो रहा है, तो इसके मायने यही हैं कि संधि प्रोटोकॉल का उसके हस्ताक्षरकर्ताओं द्वारा उल्लंघन किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र को इसके बारे में कुछ ठोस सोचना करना होगा।

बढ़ते ताप के अन्य दुष्प्रभाव भी सामने आए हैं। वर्ष 1991-2000 की तुलना में 2013-2022 में 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों में गर्मी से संबंधित मौतों में 85 फ़ीसद की वृद्धि हुई, जो तापमान में बदलाव न होने पर अपेक्षित 38 फ़ीसद वृद्धि से काफ़ी अधिक है। वर्ष 2022 में चरम मौसम की घटनाओं के परिणामस्वरूप होने वाले आर्थिक नुक़सान का कुल मूल्य 264 अरब डॉलर होने का अनुमान लगाया गया था, जो 2010-2014 की तुलना में 23 फ़ीसद अधिक है। गर्मी के संपर्क में आने से 2022 में वैश्विक स्तर पर 490 अरब संभावित श्रम घंटों का नुक़सान हुआ (1991-2000 से लगभग 42 फ़ीसद की वृद्धि), जो निम्न (6.1 फ़ीसद) और मध्यम आय (3.8 फ़ीसद) वाले देशों में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में बड़े नुक़सान के लिए ज़िम्मेदार है। ये नुक़सान तेज़ी से आजीविका को प्रभावित और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने और उबरने की क्षमता को सीमित कर रहे हैं। यक्ष प्रश्न यह है कि क्या 2024 शेष वर्ष की तुलना में तापमान की नई ऊंचाई पर पहुंचेगा। एनओएए ने अनुमान लगाया कि 22 फ़ीसद संभावना है कि 2024 सबसे गर्म वर्ष होगा, और 99 फ़ीसद संभावना है कि यह शीर्ष पांच में शुमार होगा। *(साभार : जनसत्ता)* ■■

"अल्लाह ही रात और दिन का उलट-फेर करता है। निश्चय ही आंखें रखने वालों के लिए इसमें एक शिक्षा है।"

(क़ुरआन, 24:44)

with best compliment from

Md. Yunus Sb.

Indore [M.P.]

वर्तमान जलवायु संकट और इस्लामी शिक्षाएं



समाधान

संपादन प्रभाग

“अल्लाह ने इस पर्यावरण में जो संतुलन रखा है, तुम उसमें कोई ख़राबी पैदा मत करो।”
(क़ुरआन-55:8)

आज जलवायु संकट और पर्यावरण सुरक्षा एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। प्रकृति की ओर से हमें लगातार यह चेतावनी मिल रही है कि अगर हमने अपने आपको नहीं संभाला और बहुत जल्द इस पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम नहीं किया तो यहां जीवन का बाक़ी रहना बहुत कठिन हो जाएगा। इन्सानों ने ख़ुद अपने हाथों से अपनी बर्बादी का पूरा सामान कर लिया है। हम देखते हैं कि यह पूरा संसार, यह पूरा गृह और ब्रह्मांड हमारे लिए ईश्वर का दिया हुआ एक अनमोल तोहफ़ा है। यह धरती और इस धरती पर उपलब्ध स्वच्छ पानी व शुद्ध हवा और इसी प्रकार आसमान में और इस आसमान से परे जो कुछ भी है वह सबका सब हमारे लिए क़ुदरत का एक अनमोल तोहफ़ा है। इसमें सूरज है चांद है, दिन-रात का आना-जाना है, इसमें आकाश गंगाएं हैं और इन सब में एक संतुलन है। इस्लाम ने हम सबको इस संतुलन में किसी प्रकार की छेड़छाड़ न करने की शिक्षा दी है। आइए हम यह देखें कि पर्यावरण के बारे में इस्लाम की शिक्षाएं क्या हैं?

क़ुरआन कहता है–“अल्लाह ने इस पर्यावरण में जो संतुलन रखा है, तुम उसमें कोई ख़राबी पैदा मत करो।”

(क़ुरआन-55:8)

हम देखते हैं कि इस धरती के साथ-साथ इस पूरे ब्रह्मांड में जो संतुलन और अनुशासन है, इसी से इस धरती पर मानव जीवन संभव है। यदि यह संतुलन बिगड़ जाएगा, जैसा कि अभी बिगड़ रहा है। इन्सान भारी मात्रा में कार्बन और ज़हरीली गैसों का उत्सर्जन कर रहा है। पूरे पर्यावरण पानी, धरती और हवा में ज़हर ही ज़हर घुलता जा रहा है। हम जिस हवा में सांस ले रहे हैं वह साफ़ नहीं है, हम जो पानी पी रहे हैं वह शुद्ध नहीं है। हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं।

क़ुरआन की लगभग 300 आयतों और 40 हदीसों में पर्यावरण संबंधी जानकारियां, उनमें बिगाड़ पैदा करने के प्रभावों और कारणों तथा एक अच्छे वातावरण वाली ज़िन्दगी के लिए मार्गदर्शन पाया जाता है, जो इस्लाम के पर्यावरण संबंधी पक्ष को स्पष्ट करता है। इन आयतों एवं हदीसों का सार यह है कि अल्लाह ने धरती और आकाश की हर वस्तु के बीच एक संतुलन रखा है, जिसे बनाए रखना इन्सान का कर्तव्य है। इसके अलावा इस संतुलन में बिगाड़ पैदा करना या पर्यावरण को दूषित करना गुनाह भी है। इस्लाम में साफ़-सफ़ाई, पाकी या पवित्रता पर बहुत ज़ोर दिया गया है और इस संबंध में बहुत से निर्देश मिलते हैं। इन निर्देशों के परिणामस्वरूप जो समाज अस्तित्व में आता है, वहां पर्यावरण को दूषित न करने, अर्थात् स्वच्छ भोजन, साफ़ पानी, शुद्ध हवा एक ईमान वाली ज़िन्दगी का अनिवार्य अंग होगा और ऐसे तमाम तत्व जो उन्हें दूषित और हानिकारक बनाएं उनकी एक अच्छे समाज में कोई जगह नहीं होनी चाहिए, चाहे उनसे किसी का कोई हित ही क्यों न जुड़ा हो। इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने स्पष्ट रूप से कुछ प्रदूषणों से मना किया है।

• हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि हम से अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया, दो घृणित कार्यों से बचो। हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! वे घृणित कार्य क्या हैं? आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, 'रास्तों या छायादार वृक्षों के नीचे मल-मूत्र त्यागना।'

• तबरानी ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत किया है कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल.) से सुना है, 'जो कोई सार्वजनिक उपयोग की जगहों में मल-मूत्र त्यागता है उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और इन्सानों की ओर से फिटकार होती है।'

क़ुरआन की लगभग 300 आयतों और 40 हदीसों में पर्यावरण संबंधी जानकारियां, उनमें बिगाड़ पैदा करने के प्रभावों और कारणों तथा एक अच्छे वातावरण वाली ज़िन्दगी के लिए मार्गदर्शन पाया जाता है, जो इस्लाम के पर्यावरण संबंधी पक्ष को स्पष्ट करता है। इन आयतों एवं हदीसों का सार यह है कि अल्लाह ने धरती और आकाश की हर वस्तु के बीच एक संतुलन रखा है, जिसे बनाए रखना इन्सान का कर्तव्य है।



मल-मूत्र वह न्यूनतम प्रदूषण है जो इन्सान जाने-अनजाने में सार्वजनिक जगहों, छायादार वृक्षों और पानी में फैला सकता है। जब इस प्रकार के प्रदूषण से मना किया गया है तो फिर गंभीर प्रकार के प्रदूषणों को जिनमें विषैले रासायनिक पदार्थों को ज़मीन, पानी और वातावरण में फैलाना शामिल है, उन्हें कैसे सहन किया जा सकता है। वर्तमान पर्यावरण संबंधी संकट का एक पहलू यह भी है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं करते, इसमें सीमाओं का उल्लंघन कर जाते हैं। इस संबंध में अगर इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के निर्देश पर विचार किया जाए तो एक बेहतर स्थिति पैदा होगी। इस संबंध में एक हदीस हमारा भरपूर मार्गदर्शन करती है–

• अल्लाह के रसूल (सल्ल.) एक बार हज़रत सआद (रज़ि.) के पास से गुज़रे जो नमाज़ के लिए वुज़ू कर रहे थे। आपने उन्हें देखकर फ़रमाया, 'ऐ सआद! तुमने सीमा का उल्लंघन किया है?' हज़रत सआद ने पूछा, क्या वुज़ू करने में भी सीमा का उल्लंघन है? आप (सल्ल.) ने फ़रमाया, 'हां, चाहे तुम बहती नदी के किनारे क्यों न हो।'

इस हदीस में एक नेक काम के लिए भी आवश्यकता से अधिक पानी के इस्तेमाल से मना किया गया है और प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध होने के बावजूद ऐसा करने से रोका गया है। आज हम देखते हैं कि हमारे जीवन में जिन चीज़ों की सबसे अधिक बर्बादी होती है, उनमें पानी सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। आने

वाले समय में उपलब्ध स्वच्छ पानी की कमी निश्चित है, क्योंकि अधिकतर पीने योग्य पानी दूषित हो चुका है। पर्यावरण में प्रदूषण के कारण बारिश की व्यवस्था बिगड़ गयी है और भूमि के नीचे पानी के स्रोत भी सूख रहे हैं।

इसके अलावा इस्लाम ने पेड़-पौधों की सुरक्षा पर ख़ास ज़ोर दिया है। पेड़-पौधों का अस्तित्व धरती पर जीवन की गारंटी है। इनसे इन्सानों व अन्य जीवों को भोजन ही नहीं मिलता, बल्कि अन्य चीज़ों के अतिरिक्त ऑक्सीजन भी मिलती है। ऐसे में यदि हरियाली की हरी चादर ज़मीन से समाप्त होने लगे तो इसका नुक़सान धरती के सभी जीवों को उठाना पड़ेगा। वर्तमान समय में यही हो रहा है। इस धरती पर पायी जाने वाली हरी चादर जो जंगल और खेत-खलियान बनाते हैं, पिछले 50 वर्षों में एक तिहाई से अधिक समाप्त हो चुकी है। ऐसे में ग्रीन हाउस गैसों का दुष्प्रभाव जलवायु परिवर्तन के भारी बदलाव के रूप में सामने आ रहा है।

इन हालात में इस्लाम के पैग़म्बर की शिक्षाओं का महत्व कई गुना बढ़ जाता है जो आप (सल्ल.) ने पेड़-पौधें की सुरक्षा के संदर्भ में दी हैं–

• हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया, 'कोई मुसलमान जब एक ऐसा वृक्ष लगाता है या फ़सल उगाता है जिसमें से चिड़िया या अन्य जीव कुछ खाते हैं तो उसे सदक़े का अज्र (दान का प्रतिदान) मिलता है।'

(बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी)

आप (सल्ल.) ने पेड़-पौधों और पत्तों को अकारण तोड़ने से मना किया है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया है कि 'अगर क़ियामत सामने हो और किसी के हाथ में खजूर का पौधा लगाने के लिए मौजूद हो और वह उसे लगा सकता हो तो उसे चाहिए कि उसे लगा दे।'

धरती के संतुलन में बिगाड़ पैदा करना या पर्यावरण को दूषित करना गुनाह (पाप) है। इस्लाम में साफ़-सफाई, पाकी या पवित्रता पर बहुत ज़ोर दिया गया है और इस संबंध में बहुत से निर्देश मिलते हैं। पर्यावरण को दूषित न करने, अर्थात् स्वच्छ भोजन, साफ़ पानी, शुद्ध हवा एक ईमान वाली ज़िन्दगी का अनिवार्य अंग है, ऐसे तमाम तत्व जो इन्हें दूषित और हानिकारक बनाएं उनकी एक अच्छे समाज में कोई जगह नहीं होनी चाहिए, चाहे उनसे किसी का कोई हित ही क्यों न जुड़ा हो।

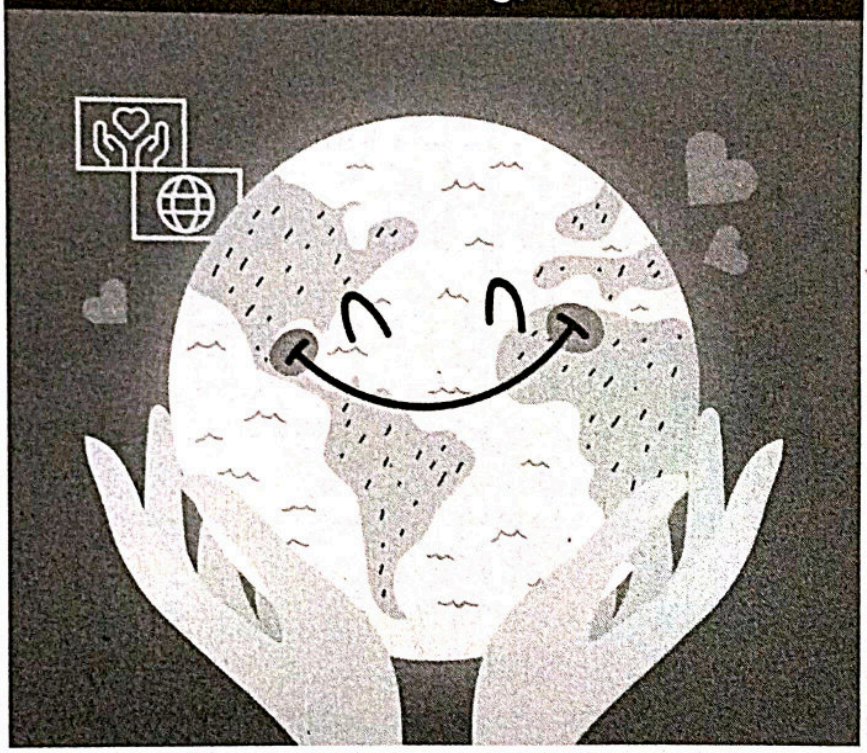

आप (सल्ल.) के इन कथनों से एक ओर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पेड़-पौधों को अकारण काटने या उन्हें नुक़सान पहुंचाने से मना किया गया है और दूसरी ओर उनके लगाने को पुण्य कार्य बताया गया है। उपर्युक्त तथ्यों की रोशनी में यह स्पष्ट हो जाता है कि क़ुरआन और हदीस में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जो शिक्षाएं दी गयी हैं उनका वर्तमान समय में कितना महत्व है और स्वयं मुहम्मद (सल्ल.) का आदर्श जीवन इसकी प्रेरणा देता है। हमें इस्लाम की इन शिक्षाओं की रोशनी में आत्म-मंथन करने की आवश्यकता है। आज पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु का संकट अपने चरम पर है और प्रकृति का संतुलन बिगड़ चुका है। ऐसे में इस्लामी शिक्षाएं हम से मांग करती हैं कि हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर करें और पर्यावरण को प्रदूषित करने से बाज़ आ जाएं। ■■

कविता

कड़वी हवा

"बंजारे लगते हैं मौसम;

मौसम बेघर होने लगे हैं।

जंगल, पेड़, पहाड़, समंदर;

इंसान सब कुछ काट रहा है,

छील-छील कर ख़ाल ज़मी की;

टुकड़ा-टुकड़ा बाँट रहा है,

आसमान से उतरे मौसम;

सारे बंजर होने लगे हैं,

मौसम बेघर होने लगे हैं।

दरियाओं पर बांध बने हैं;

फोड़ते हैं सिर चट्टानों से,

'बंदी' लगती है ये ज़मीन;

डरती है अब इंसानों से,

बहती हवा पर चलने वाले;

पाँव पत्थर होने लगे हैं,

मौसम बेघर होने लगे हैं।"

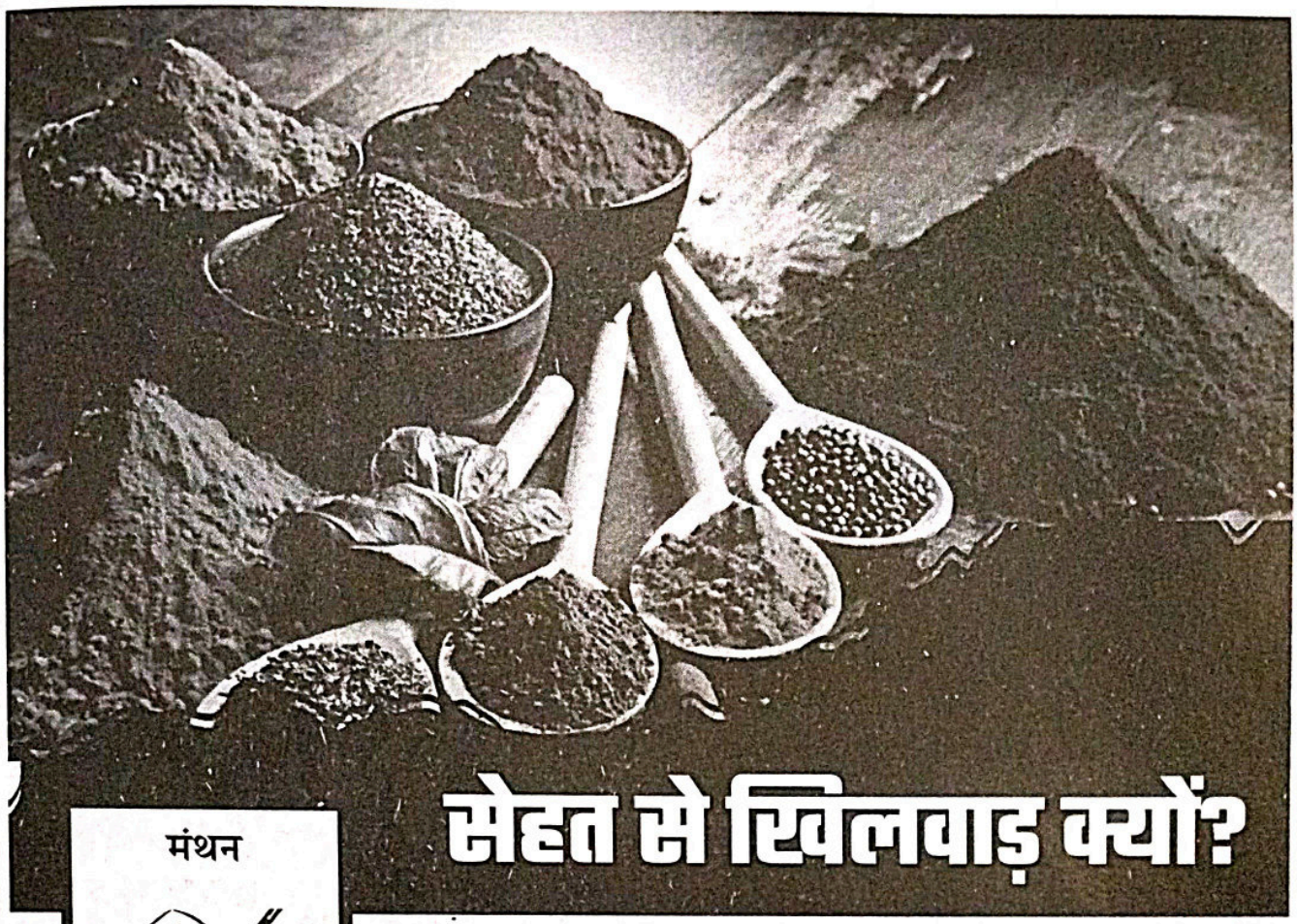

सेहत से खिलवाड़ क्यों?

मंथन



जितेंद्र गौतम

हाल में हांगकांग और सिंगापुर की नियामक एजेंसियों ने भारतीय कंपनियों के मसालों में एथिलीन ऑक्साइड नाम का रासायनिक कैंसर कारक तत्व पाया। इन दोनों देशों में प्रतिबंध के बाद, मीडिया ने बताया कि सितम्बर वर्ष 2020 और अप्रैल वर्ष 2024 के बीच यूरोपीय खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण (ईएफ़एसए) ने 527 भारतीय खाद्य उत्पादों में इस रसायन का पता लगाया था। इसका उपयोग मसालों को सुगंधित बनाने के लिए भी किया जाता है। एथिलीन ऑक्साइड के संपर्क में आने से लिंफोमा और ल्यूकेमिया जैसे कैंसर हो सकते हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण उन भारतीय मसाला ब्रांडों के देशव्यापी नमूने एकत्र कर रहा है, जिन्हें कुछ विदेशी नियामकों ने लाल झंडी दिखाई है।

निश्चित रूप से इन मसालों की जांच सक्षम भारतीय प्रयोगशालाओं में की जानी चाहिए, लेकिन उससे पहले यह देखना चाहिए कि भारत में बने खाद्य उत्पादों की जांच के लिए पहले क्या-क्या उपाय किए गए हैं? क्या हमारी नियामक एजेंसियों के पास परीक्षण की तमाम ज़रूरी व्यवस्था है? हमें विदेशी संगठनों के ख़ुलासे पर ही क्यों निर्भर रहना चाहिए या विदेशी नियामकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से ही सतर्क क्यों रहना चाहिए? जब हम भारत में कुछ बनाते हैं, तो क्या उसकी सही जांच यहीं नहीं करनी चाहिए?

भारत के खाद्य निर्यात में कैंसर कारक और अन्य नुकसानदेह तत्वों की मौजूदगी से विदेश में इनकी बिक्री की संभावनाओं पर बुरा असर होगा। वैश्विक मानकों के समकक्ष मानक बनाकर ही हम अपने उत्पादों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकेंगे।

यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि एफ़एसएसएआई यानी भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकारण अपना काम सही तरह नहीं कर पा रहा है। यह हाल में तब इंगित हुआ था, जब बहुराष्ट्रीय कंपनी नेस्ले के उत्पाद सेरेलेक के बारे में यह सामने आया था कि उसमें चीनी की मात्रा कहीं अधिक है। क्या यह विचित्र नहीं कि एफ़एसएसएआई की ओर से अब यह कहा जा रहा है कि पूरे देश में मसालों

की गुणवत्ता की जांच होगी? आख़िर यह काम पहले क्यों नहीं हुआ?

उचित यह होगा कि यह जांच मसालों तक ही सीमित न रहे, क्योंकि देश में बिकने वाले न जाने कितने खाद्य एवं पेय पदार्थ ऐसे हैं, जिनकी गुणवत्ता को लेकर संदेह होता रहता है और शिकायतें भी आती रहती हैं। खाद्य एवं पेय पदार्थों की गुणवत्ता से जान-बूझकर समझौता करने के साथ उनमें अखाद्य एवं हानिकारक सामग्री की मिलावट बहुत आम है। इसका बड़ा कारण उनकी गुणवत्ता की जांच सही तरीक़े से न होना

करने के साथ ही देश के फार्मा उद्योग को भी क्षति पहुंचाते हैं। अच्छा यह होगा कि वे सभी भारतीय कंपनियां चेत जाएं, जो अपने खाद्य उत्पाद निर्यात करती हैं।

भारत के खाद्य निर्यात में कैंसर कारक और अन्य नुक़सानदेह तत्वों की मौजूदगी से विदेश में इनकी बिक्री की संभावनाओं पर बुरा असर होगा। वैश्विक मानकों के समकक्ष मानक बनाकर ही हम अपने उत्पादों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकेंगे।

हमारे देश में खाद्य पदार्थों में मिलावट की खबरें समाचार पत्रों में

उचित यह होगा कि यह जांच मसालों तक ही सीमित न रहे, क्योंकि देश में बिकने वाले न जाने कितने खाद्य एवं पेय पदार्थ ऐसे हैं, जिनकी गुणवत्ता को लेकर संदेह होता रहता है और शिकायतें भी आंती रहती हैं। खाद्य एवं पेय पदार्थों की गुणवत्ता से जानबूझकर समझौता करने के साथ उनमें अखाद्य एवं हानिकारक सामग्री की मिलावट बहुत आम है। इसका बड़ा कारण उनकी गुणवत्ता की जांच सही तरीके से न होना है।

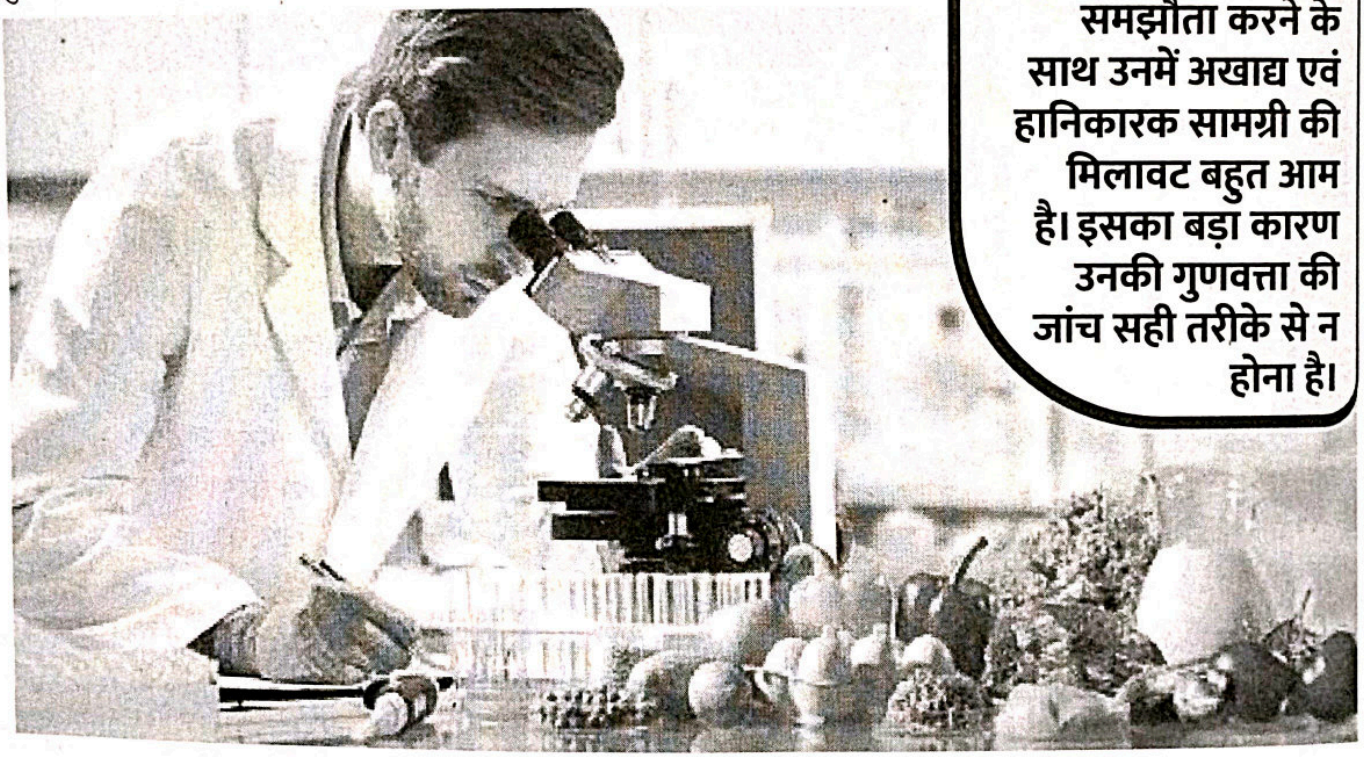

है। यह समस्या दवाओं के मामले में भी है। दवाओं के सैंपल केवल जांच में फेल ही नहीं होते रहते, बल्कि सरकारी अस्पतालों तक में दोयम दर्जे की और कभी-कभी तो नक़ली दवाएं खपाने के समाचार आते रहते हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कुछ समय पहले भारत से निर्यात होने वाली खांसी की दवाओं में विषाक्त पदार्थ की मिलावट के मामले सामने आए थे। ऐसे मामले भारत की साख़ को कमज़ोर

छपती रहती हैं, लेकिन आज तक कोई ऐसी कार्रवाई नहीं की गई, जिससे स्थिति बदले। दूध, पानी, तेल, घी, खोया, दवा, आटा, बेसन, दही और मिठाई आदि में मिलावट की ख़बरें आती रहती हैं। ऐसा कोई खाद्य पदार्थ नहीं, जिसमें मिलावट न की जा रही हो। यह मिलावट का ही परिणाम है कि लोगों में तरह-तरह की बीमारियां फैल रही हैं और उनकी जान जा रही है। इस वजह से हर आदमी कम उम्र में ही किसी न किसी रोग से पीड़ित

हो रहा है।

प्रायः देखा गया है कि मात्र दिपावली, दशहरा और होली जैसे अवसरों पर ही संबंधित विभाग अभियान चलाते हैं और अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। कुछ खाद्य पदार्थों का नमूना लेते हैं और कुछ विशेष प्रतिष्ठानों पर छापेमारी करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि यह छापेमारी और नमूने लेने की कार्रवाई क्यों की जाती है? चूंकि, स्वास्थ्य मानव



जीवन की सबसे बड़ी नेमत है, इससे खिलवाड़ करने का अधिकार किसी को नहीं दिया जा सकता है, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली व्यक्ति क्यों न हो। इसलिए ज़रूरी है कि शासन-प्रशासन मिलावटख़ोरों के ख़िलाफ़ ऐसा सख़्त और कारगर क़दम उठाए कि ऐसा घिनौना कार्य करने से पहले वह कई बार सोचें। वे सज़ा के डर से ही मिलावटख़ोरी को हमेशा के लिए छोड़ देने को विवश हो जाए।

निःसंदेह ऐसा होने से लोग कम बीमार पड़ेंगे, परिणामस्वरूप अस्पतालों पर कम दबाव पड़ेगा और लोगों के जीवन में ख़ुशहाली आएगी। आमजन की भी यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे खाद्य पदार्थों का चयन सावधानीपूर्वक करें। किसी भी ऐसी जगह से खानपान की वस्तुएं न ख़रीदें, जहां मिलावट होने की संभावना अधिक हो।

हमें अपनी नियामक एजेंसियों को उद्योग के प्रभाव या राजनीतिक दबावों का सामना करने में सक्षम बनाने की ज़रूरत है। खाद्य गुणवत्ता जांचने वालों को अधिक साधन संपन्न, सतर्क और अभेद्य होने की ज़रूरत है। नियामक एजेंसियों की कमान ईमानदार व्यक्तियों के हाथों में सौंपनी चाहिए।

एजेंसी का मार्गदर्शन करने वाली तकनीकी सलाहकार समितियों में लचीले लोगों को शामिल करके एजेंसी पर क़ब्ज़ा देने से बचना चाहिए। हालांकि, ऐसी नियुक्तियां अक्सर राजनीतिक फ़ैसले पर आधारित होती हैं, पर नागरिक समाज को सुनिश्चित करना चाहिए कि नियामक एजेंसियां जनस्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहें। इस संबंध में हमें सतत सतर्क रहने की ज़रूरत है। सतर्क रहें, स्वच्छ खाएं और स्वस्थ रहें। ■■

कान्ति साप्ताहिक और कान्ति मासिक के सभी पाठक

कृपया ध्यान दें!

अपना पूरा नाम : .....

पता : .....

पोस्ट ऑफिस : .....

डिस्ट्रिक्ट : .....स्टेट : .....पिन : .....

कांटेक्ट नंबर : .....

नीचे दिए गए व्हाट्सऐप नम्बर पर भेजने की मेहरबानी करें।

धन्यवाद!

व्हाट्सऐप नंबर : 98187 99223

नोट : अपना कांटेक्ट नंबर लिखना न भूलें।

शिक्षा का बाज़ार या बाज़ार की शिक्षा?

शिक्षा विमर्श



डॉ. प्रदीप कुमार

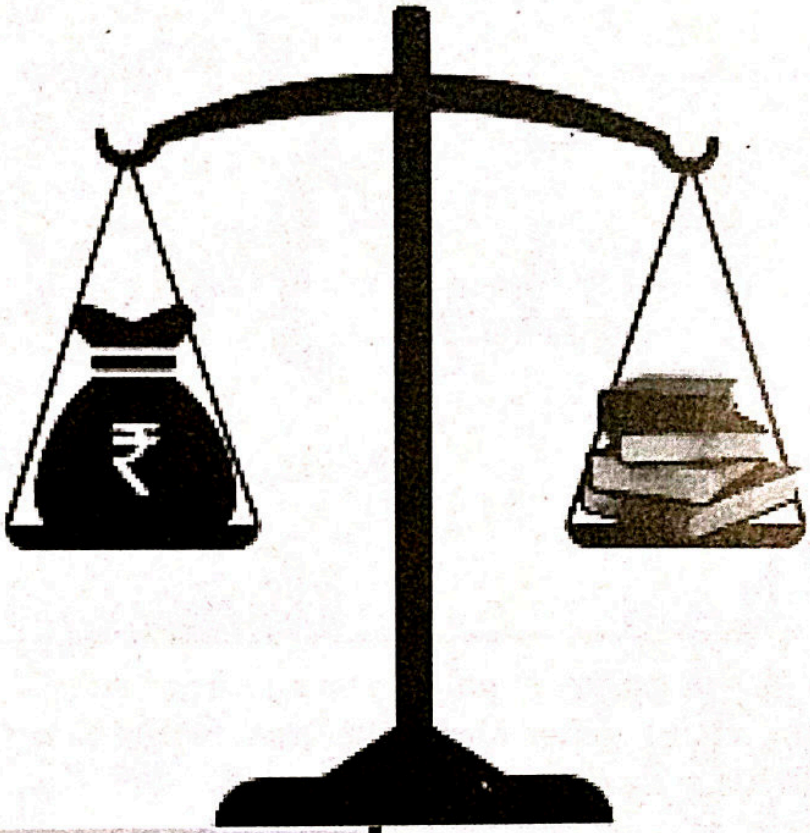

एक मज़बूत अर्थव्यवस्था बनने के लिए देश के पास दीर्घकालिक और सार्थक स्तर पर ज्ञान प्रणाली की आवश्यकता होती है, जो उसे शक्ति प्रदान करती है। देश में जितनी बौद्धिक संपदा सृजित होगी, उतने ही बड़े पैमाने पर रोज़गार भी सृजित होंगे। जो राष्ट्र अनुसंधान एवं विकास में निवेश करने में विफल रहता है, वह आर्थिक अस्थिरता में फंसता रहता है।

अनुसंधान एवं विकास ही बेहतर जीवन के द्वार खोलता है। शायद हमने अनुसंधान एवं विकास पर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना अन्य देशों ने दिया। जहां चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने शिक्षा पर बहुत अधिक ख़र्च किया, वहीं हम आज तक उचित बजट की बाट जोह रहे हैं। अनुसंधान एवं विकास पर भारत का ख़र्च सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.6 प्रतिशत है और विश्व औसत 1.8 प्रतिशत से काफ़ी नीचे है। इसमें निजी क्षेत्र का योगदान उनके सकल व्यय का 40 प्रतिशत से कम है, जबकि उन्नत देशों में यह आंकड़ा 75 प्रतिशत से अधिक है।

इस समय देश की शिक्षा के समक्ष कुछ चुनौतियां हैं, जिनका समाधान किया जाना समय की मांग है। भारत के पास नवाचार का वैश्विक चालक बनने के लिए आवश्यक सभी सामग्रियां, एक मज़बूत बाज़ार क्षमता, असाधारण प्रतिभाएं और मितव्ययी नवाचार की एक संपन्न संस्कृति है । ज़रूरत है तो उचित बजट एवं प्रतिभाओं के सही मार्गदर्शन की। यह काम शिक्षा पर अपेक्षित बजट ख़र्च करके ही किया जा सकता है।

लगभग साढ़े छब्बीस करोड़ विद्यार्थी, जो स्कूल जाने की आयु के हैं, भारतीय स्कूलों में नामांकित हैं। यह संख्या एक बड़े व्यापार को ग्राहक मुहैया कराती है, जो ट्यूशन और कोचिंग के नाम से एक नए तंत्र की संरचना करती है। साथ ही, उच्च शिक्षा के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षाएं और नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं भी इस व्यापार को उर्वर ज़मीन मुहैया कराती हैं।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था दुनिया की वृहद व्यवस्थाओं में से एक है। लगभग साढ़े छब्बीस करोड़ विद्यार्थी, जो स्कूल जाने की आयु के हैं, भारतीय स्कूलों में नामांकित हैं। इसमें कुल स्कूलों की संख्या क़रीब चौदह लाख है, जिसमें साढ़े बाईस फ़ीसद निजी स्कूल हैं। इसमें लगभग सात करोड़ विद्यार्थी माध्यमिक

> **निजीकृत शिक्षा प्रणालियां पाठ्यक्रम को केवल दिखावे के लिए कवर करती हैं। छात्र जो कुछ भी सीखते हैं उसका विश्लेषण नहीं करते हैं, बल्कि केवल रटने पर निर्भर रहकर उसे आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों की आलोचनात्मक या विश्लेषणात्मक सोचने की क्षमता कम हो जाती है। वे किसी मामले को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने और लीक से हटकर सोचने में सक्षम नहीं हो पाते हैं।**

और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत हैं। यह संख्या एक बड़े व्यापार को ग्राहक मुहैया कराती है, जो ट्यूशन और कोचिंग के नाम से एक नए तंत्र की संरचना करती है। साथ ही, उच्च शिक्षा के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षाएं और नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं भी इस व्यापार को उर्वर ज़मीन मुहैया कराती हैं।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में सत्ताईस फ़ीसद और शहरी क्षेत्रों में अड़तीस फ़ीसद विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर ट्यूशन या कोचिंग ले रहे हैं। पिछले केवल चार वर्षों (2018 से 2022) में निजी ट्यूशन केंद्रों की संख्या में बारह फ़ीसद की बढ़ोत्तरी हुई है। मौजूदा आकलन के अनुसार कोचिंग



का बाज़ार लगभग अट्ठावन हज़ार करोड़ रुपये का है, जिसके वर्ष 2028 तक एक लाख चौंतीस हज़ार करोड़ रुपये का हो जाने का अनुमान है।

इन आंकड़ों के बीच कई प्रश्न उठते हैं। मसलन, क्या इन कोचिंग केंद्रों की बढ़ती संख्या मौजूदा शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर आक्षेप है? इन केंद्रों में ऐसा क्या पढ़ाया जाता है जो स्कूलों और महाविद्यालयों में नहीं पढ़ाया जा रहा है? ज्ञान के ऐसे कौन-से सोपान और घटक हैं, जो स्कूली या इसके संस्थानीकरण में छिटक और इन ट्यूशन और कोचिंग केंद्रों द्वारा समेटे जाते हैं? इन केंद्रों में पढ़ाने वाले अध्यापक कौन-सी शिक्षण विधि अपना रहे हैं, जिससे सीखने की संभावना शत-प्रतिशत रहती है और यह शिक्षण विधि हमारे स्कूली और महाविद्यालयी अध्यापकों से क्यों अछूती रहती है?

क्या स्कूलों और महाविद्यालयों में संरचनागत ढांचों और संसाधनों का ऐसा अभाव है, जहां कारगर शिक्षण नहीं हो पा रहा है? अध्यापक-विद्यार्थी अनुपात भी 1:27 है, फिर किन वजहों से पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि और मूल्यांकन की संस्थागत प्रक्रियाएं वह ज्ञान और शिक्षा विद्यार्थियों को मुहैया नहीं करा पा रही हैं, जिनके लिए उन्हें ट्यूशन और कोचिंग की राह पकड़नी पड़ती है?

क्या स्कूल और तमाम शिक्षा के केंद्र, ज्ञान के किसी ऐसे स्वरूप से अनभिज्ञ हैं, जो उसे और अधिक उपयोगी बनाता है? परीक्षाएं अगर ज्ञान के वस्तुनिष्ठ स्वरूप को वैध क़रार देती हैं, तो यह वस्तुनिष्ठता क्या स्कूल द्वारा पोसी नहीं जाती है? और अगर वस्तुनिष्ठता का पोषण इन वैध शिक्षण संस्थाओं में होता है, तो कोचिंग या ट्यूशन केंद्र जैसे राज्येतर कारक शिक्षा और ज्ञान को लेकर ऐसा व्यापक

हस्तक्षेप कैसे कर पा रहे हैं? क्या यह ज्ञान के उत्तर-आधुनिकीकरण का संकेत है, जहां ज्ञान का सूचना मात्र में तब्दील हो जाना है और यह कोचिंग संस्थान बख़ूबी कर पाते हैं और ज्ञान/सूचना के रटने के नवाचारी तरीक़े इजाद कर लेते हैं, जो स्कूल या महाविद्यालय में संभव या वांछनीय नहीं है।

अभी तीन दशक पहले तक जो विद्यार्थी ट्यूशन पढ़ते थे उनकी अकादमिक क्षमता कमतर मानी जाती थी और ट्यूशन या कोचिंग को निदानात्मक ज्ञान केंद्र के रूप में ही मान्यता थी। बाज़ार के उदारीकरण के साथ ही इसने एक 'वस्तु' का आकार ले लिया, जिसका विनिमय एक निश्चित शुल्क के साथ किया जा सके।

आज प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर डिग्री तक, माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए वित्तीय ज़रूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ट्यूशन फ़ीस के अलावा, माता-पिता को कई अन्य ख़र्च भी करने पड़ते हैं। किताबें, स्टेशनरी, प्रोजेक्ट, कोचिंग क्लास आदि को भी शिक्षा की लागत के रूप में शामिल किया जाता है जो ट्यूशन फ़ीस में शामिल नहीं है। इसके अलावा, यदि बच्चा अपने घर से दूर किसी अन्य शहर में रहता है, तो लागत बढ़ जाती है–यात्रा, आवास, भोजन, अन्य विविध ख़र्च। व्यावसायीकरण की दृष्टि से छात्र उपभोक्ता हैं, शिक्षा वस्तुएं हैं और शिक्षण संस्थान दुकान हैं।

शिक्षा के व्यावसायीकरण के कारण छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा का मूल्य काफ़ी गिर गया है। निजीकृत शिक्षा प्रणालियां पाठ्यक्रम को केवल दिखावे के लिए कवर करती हैं। छात्र जो कुछ भी सीखते हैं उसका विश्लेषण नहीं करते हैं, बल्कि केवल रटने पर निर्भर रहकर उसे आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों की आलोचनात्मक या विश्लेषणात्मक सोचने की क्षमता कम हो जाती है। वे किसी मामले को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने और लीक से हटकर सोचने में सक्षम नहीं हो पाते हैं।

इसका प्रमुख नकारात्मक प्रभाव बेरोज़गारी है। यदि कोई छात्र अपने कॉन्सेप्ट का सही प्रयोग नहीं कर पाता है तो उसे अच्छी नौकरी मिलने की संभावना काफ़ी हद तक कम हो जाती है।

आज शिक्षा के व्यावसायीकरण के कारण छात्रों में भौतिकवादी दृष्टिकोण विकसित होता जा रहा है। छात्रों में देश के विकास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय स्वार्थी रवैया विकसित होने लगा है। अतः शिक्षा जगत में ऐसा भी बहुत कुछ है, जिससे छुटकारा पाना आवश्यक है। इसमें सबसे पहले आती है व्यवस्थागत शिथिलता। इसके कारण अधिकांश सुधार केवल काग़ज़ों तक रह जाते हैं। यदि शिक्षक प्रशिक्षण पूरी तरह व्यापारियों से मुक्त कराया जा सके, अध्यापकों की नियुक्ति नियमित और समय पर होने लगे तो देश की सकारात्मक ऊर्जा और बौद्धिक संपदा में भारी वृद्धि होगी। ■■





विचारणीय

संपादन प्रभाग

'जीव-हत्या' की वास्तविकता

◆ साहार और क़ुरबानी के सिलसिले में 'जीव-हत्या' भी एक सवाल के रूप में सामने आता रहता है। कुछ आक्षेपकर्ता जीव-हत्या को क़ुरबानी से जोड़कर यहां तक कह देते हैं कि क़ुरबानी से जीव-हत्या को बढ़ावा मिलता है। अतः क़ुरबानी के औचित्य को जानने के पूर्व यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जीव-हत्या की परिभाषा समझ ली जाए। जीव-हत्या का सीधा अर्थ है, वह चीज़ अथवा-प्राणी जिसमें जीवन और चेतना पायी जाए अथवा दोनों में से कोई एक चीज़ पायी जाए, उसको अनाधिकार नष्ट कर दिया जाए अथवा उसका जीवन समाप्त कर दिया जाए। यह एक दुखद स्थिति है कि आज अधिकतर लोग जीव-हत्या के सही भावार्थ को समझने की चेष्टा नहीं करते। इसके लिए वे ख़ुद क़सूरवार नहीं हैं, बल्कि मीडिया और आसपास के भ्रामक वातावरण का उन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक बात है।

जीव-हत्या का सीधा अर्थ है, वह चीज़ अथवा-प्राणी जिसमें जीवन और चेतना पायी जाए अथवा दोनों में से कोई एक चीज़ पायी जाए, उसको अनाधिकार नष्ट कर दिया जाए अथवा उसका जीवन समाप्त कर दिया जाए। यह एक दुखद स्थिति है कि आज अधिकतर लोग जीव-हत्या के सही भावार्थ को समझने की चेष्टा नहीं करते। इसके लिए वे ख़ुद कसूरवार नहीं हैं, बल्कि मीडिया और आसपास के भ्रामक वातावरण का उन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक बात है।

हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिन्हें उन पशु-पक्षियों को ज़िब्ह करने में ही जीव-हत्या नज़र आती है, जिनका मांस मानव शरीर के लिए हर प्रकार से लाभकारी है और शरीर की विभिन्न अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। शायद ऐसे लोगों की नज़र इस ओर नहीं जाती कि उनकी परिभाषा से देखा जाए तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अनगिनत जीव-हत्याएं करता है। अब वनस्पति वैज्ञानिकों ने अनेक प्रमाणों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है और उनमें चेतना का अंश भी मिलता है।

प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने सबसे पहले यह खोज की थी, लेकिन अब तो उनकी खोज के अनेकानेक प्रमाण जुट गये हैं। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि मनुष्य प्रतिदिन शाक-सब्ज़ियों का जो



सेवन करता है, तो एक ही साथ अनेक जीव रूपी शाक सब्ज़ियों की हत्याएं कर डालता है। यही वह कारण है कि जैन समाज के एक वर्ग के कुछ लोग शाक-सब्ज़ी का सेवन नहीं करते। वे हवा में फैले कीटाणुओं से बचने के लिए मुंह पर कपड़े बांधते हैं कि कहीं कोई कीटाणु शरीर के अन्दर चला जाए और जीव-हत्या हो जाए।

कुछ लोग ज़मीन पर इसलिए नहीं चलते कि कहीं चोटियां और कीड़े-मकोड़े न मर जाएं एवं जीव-हत्या न हो जाए। स्पष्ट है कि कितना ही बचा जाए कथित "जीव-हत्या" से बचा नहीं जा सकता और यह अव्यावहारिक तथ्य है कि मनुष्य अपने जीवन और दृष्टिकोण को अकारण संकुचित करे और अपने हाथ-पैर बांध ले।

यहां पर यह कहना अनुचित न होगा कि जो लोग तथाकथित "जीव-हत्या" से बचने का प्रपंच करते हैं, वे "जीव-हत्या" से कदापि नहीं बच पाते। माना कि शाक-सब्ज़ी नहीं खाते, दही नहीं खाते कि उसमें बैक्टीरिया होते हैं और मांस-मछली का सेवन नहीं करते और ज़मीन पर पैर नहीं रखते, लेकिन वे जाने-अनजाने क्या हवा में खुलकर सांस नहीं लेते, जिसमें कीटाणु रह सकते हैं।

मैंने उस ज़ात की तरफ़ अपना रुख मोड़ा जिसने आसमानों को और ज़मीनों को पैदा किया, इस हाल में मैं इब्राहीम में हनीफ़ के दीन पर हूं और मुश्रिको में से नहीं हूँ।बेशक मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा मरना और जीना सब अल्लाह के लिए हैं जो रब्बुल आलमीन है, जिसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं फरमाबरदारों में से हूं। ऐ अल्लाह, यह कुर्बानी तेरी तौफ़ीक़ से है और तेरे लिए है।

फिर बीमार पड़ने पर शरीर के कीटाणुओं को मारने के लिए एंटीबायटिक जैसी दवाएं लेने से कहां कोई बच पाता है। पेट के अलाभकारी कीड़ों को मारने की दवाएं खाने की अनिवार्यता अलग से है।

घर से मच्छर, दीमक, चूहा और अन्य जीव-जन्तु भगाने के लिए नाना प्रकार के पेस्टीसाइड्स और ज़हरीले पदार्थों का इस्तेमाल करने एवं करवाने से कौन बच पाता है और खेती-किसानी करने वाले तो फ़सल बचाने के लिए बड़े पैमाने पर कीड़े-मकोड़ों और जीव-जंतुओं को मारकर खुलेआम जीव-हत्याएं करते रहते हैं, खेत जोतकर पता नहीं कितने जीवों के प्राण ले लेते हैं, इसके बाद कीटनाशक का उपक्रम साधा जाता है, फिर खाद्यान्न उत्पादन हो पाता है, लेकिन पता नहीं क्यों हमारी नज़र इस ओर नहीं जाती।

इससे यह मालूम हुआ कि जीव-हत्याओं के बाद खाद्यान्न का उत्पादन होता है और शाक-भाजी तो जीवंत हैं। पेड़-पौधों के बीज अपने आप में तो जीवंत नहीं होते, लेकिन अपने अन्दर इसकी क्षमता अवश्य रखते हैं। हिन्दू धर्म की यह उक्ति भी समीचीन है कि "जीवः जीवस्य भोजनम् (जीव ही जीव का आहार है)। ■■







महान वैज्ञानिक डॉक्टर सालिम अली

"बर्डमैन ऑफ़ इंडिया"

डॉक्टर सालिम अली (Dr.Salim Ali), आजतक के महानतम पक्षी विज्ञानी और प्रकृतिवादियों में से एक हैं, इन्हें "बर्डमैन ऑफ़ इंडिया" के रूप में भी जाना जाता है। सालिम अली भारत और विदेशों में व्यवस्थित पक्षी सर्वेक्षण करने वाले पहले वैज्ञानिकों में से एक थे। उनके शोध कार्य को पक्षी-विज्ञान के विकास में अत्यधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण माना जाता है।

डॉक्टर सालिम अली का पूरा नाम सालिम मोइनुद्दीन अब्दुल अली था, इनका जन्म 12 नवम्बर वर्ष 1896 को मुम्बई के एक मुस्लिम परिवार में हुआ था, जिसका संबंध मशहूर तैयबजी परिवार से था। इस परिवार के सदस्यों का इस देश की आज़ादी व तरक़्क़ी में बड़ा योगदान रहा है इनके रिश्ते के मामू इस्माईल तैयबजी गांधी जी के निकट सहयोगी थे।

इबारत



संपादन प्रभाग

डॉक्टर सालिम अली जब एक वर्ष के थे तब उनके पिता मोइनुद्दीन की मृत्यु हो गई और जब वे तीन वर्ष के थे, तब उनकी माता ज़ीनत-उन-निसा का निधन हो गया था। अब अनाथ सलीम अली का पालन-पोषण उनकी चाची हमीदा बेगम और मामा अमीरुद्दीन तैयबजी ने मुंबई में किया।

10 वर्ष की उम्र में सालिम ने एक बार एक उड़ते हुए पक्षी को देखा और उसे मार गिराया। दिल से कोमल बालक सालिम, तुरंत दौड़ा और उसे उठा लिया। यह एक घरेलू गौरैया की तरह दिखाई देती थी, लेकिन गले पर एक अजीब-सा पीला धब्बा था। जिज्ञासु सालिम ने गौरैया को अपने मामा अमीरुद्दीन को दिखाया और उनसे पक्षी के बारे में पूछा। मामा अमीरुद्दीन को इस पंछी के बारे में नहीं पता था, इसलिए जवाब देने में असमर्थ उनके मामा ने उन्हें बॉम्बे

नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के मानद सचिव डब्ल्यू.एस. मिलार्ड के पास भेज दिया।

सालिम की असामान्य रुचि से चकित मिलार्ड उस पक्षी की पहचान सोनकंठी गौरैया के रूप में बताई, साथ ही उनको भारत के दूसरे विशिष्ट पक्षी भी दिखाए। इसके बाद सालिम का यहां अक्सर आना-जाना लगा रहा। बाद में मिलार्ड ने सालिम अली को 'कॉमन बर्ड्स ऑफ़ मुंबई' नाम की एक किताब दी। सालिम अली ने अपनी आत्मकथा 'द फॉल ऑफ़ ए स्पैरो' में इस घटना को अपने जीवन का टर्निंग प्वाइंट माना है, जहां से उन्होंने पक्षियों के अध्ययन को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

सालिम अली ने कॉलेज में पढ़ाई की, लेकिन विश्वविद्यालय की कोई डिग्री प्राप्त नहीं की। टंगस्टन खनन और लकड़ी में अपने भाई की सहायता करने के लिए, वह बर्मा (अब म्यांमार) गए। यह स्थान डॉक्टर सालिम के अभिरुचि में सहायक सिद्ध हुआ, क्योंकि यहां पर घने जंगल थे जहां इनका मन तरह-तरह के परिन्दों को देखने में लगता और अपना अधिकांश समय पक्षियों की तलाश एवं अध्ययन में बिताया। जल्द ही, वह वापस बंबई लौट आए और सेंट जेवियर्स कॉलेज से जूलॉजी में डिग्री पूरी की।

उन्होंने दिसम्बर वर्ष 1918 में एक दूर की रिश्तेदार तहमीना बेगम से शादी की और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के संग्रहालय में एक गाइड का पद हासिल किया। सालीम ने जर्मनी का दौरा किया और विश्व प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी डॉक्टर इरविन स्ट्रैसमैन से मुलाक़ात की और 'बर्लिन विश्वविद्यालय' में उनके संरक्षण में अध्ययन किया। वर्ष 1930 में वे भारत लौट आए, लेकिन संग्रहालय में उनका पद वित्तीय कारणों से ख़त्म कर दिया गया था।

सालीम अली को एक विवाहित व्यक्ति के रूप में, जीवन-यापन करने के लिए धन की आवश्यकता थी, इसलिए वह एक क्लर्क के रूप में संग्रहालय में शामिल हो गए। जहां मुंबई के पास एक छोटे से गांव किहिम में उनकी पत्नी का घर भी था, जो पेड़ों से घिरा एक शांत स्थान था, जहां सालीम अपना अधिकांश समय बया पक्षी की गतिविधियों के बारे में शोध करने में व्यतीत करते थे।



योगदान और उपलब्धियां

• डॉक्टर सालिम ने वर्ष 1930 में बुनकर पक्षी की प्रकृति और गतिविधियों पर चर्चा करते हुए एक शोध पत्र प्रकाशित किया। इस शोध पत्र ने उन्हें विश्व प्रसिद्ध बना दिया और पक्षी-विज्ञान के क्षेत्र में उनका नाम स्थापित किया।

• उन्होंने जो ज्ञान एकत्र किया था, उससे उन्होंने वर्ष 1941 में "भारतीय पक्षियों की पुस्तक" प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने भारतीय पक्षियों की प्रजातियों और आदतों पर चर्चा किया।

यह किताब कई वर्षों तक ख़ूब बिकी।

• उन्होंने विश्व प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी एस. डिलन रिप्ले के साथ भी सहयोग किया, जिसके परिणामस्वरूप "हैंडबुक ऑफ़ द बर्ड्स ऑफ़ इंडिया एंड पाकिस्तान" (10 वॉल्यूम सेट) प्रकाशित हुआ, जिसमें 1964-1974 के दस वर्षों के कार्य को कवर करने वाली एक व्यापक पुस्तक, जिसमें उपमहाद्वीप के पक्षियों, उनकी उपस्थिति, आवास, प्रजनन की आदतों, प्रवास आदि का वर्णन है।

• सालिम ने रीजनल फील्ड गाइड, "कॉमन बर्ड्स" (1967) और 1985 में अपनी आकर्षक आत्मकथा "द फॉल ऑफ़ स्पैरो" सहित अन्य पुस्तकें भी लिखीं।

• उन्होंने "साइलेंट वैली नेशनल पार्क" को बचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

• आज़ादी के बाद सालिम 'बांबे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' (बीएनएचएस) के प्रमुख लोगों में रहे। उन्होंने भरतपुर पक्षी विहार की स्थापना में भी प्रमुख भूमिका निभाई।

• कुमाऊं के तराई क्षेत्र से उन्होंने बया की एक ऐसी प्रजाति ढूंढ़ निकाली जो लुप्त घोषित हो चुकी थी।

• चिड़ियों को बिना घायल किए उन्हें पकड़ने की प्रसिद्ध 'गोंग एंड फायर' व 'डेक्कन विधि' सालिम अली की ही खोज है, जिन्हें आज भी पक्षी जगत में प्रयोग किया जाता है।

• भरतपुर का केवलादेव नेशनल पार्क सालिम अली के ही प्रयासों का नतीजा है।

प्रसिद्धि और पुरस्कार

सालिम अली की अपनी अटूट जिज्ञासा और 65 वर्ष के अथक परिश्रम के कारण आज एक पक्षीशास्त्री के रूप में विश्व प्रसिद्ध हैं। पक्षियों के सर्वेक्षण और संरक्षण में 65 वर्ष गुज़ार देने वाले डॉक्टर सालिम अली को उस समय परिंदों का चलता-फिरता विश्वकोष कहा जाता था।

सालिम अली की अपनी अटूट जिज्ञासा और 65 वर्ष के अथक परिश्रम के कारण आज एक पक्षी शास्त्री के रूप विश्व में प्रसिद्ध हैं। पक्षियों के सर्वेक्षण और संरक्षण में 65 वर्ष गुज़ार देने वाले डॉक्टर सालिम अली को उस समय परिंदों का चलता फिरता विश्वकोष कहा जाता था। भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 1958 में पद्म भूषण और 1976 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उन्होंने अपने जीवन में ऐसे कीर्तिमान स्थापित कर दिए जिसे कोई भी अभी तक तोड़ नहीं पाया है।

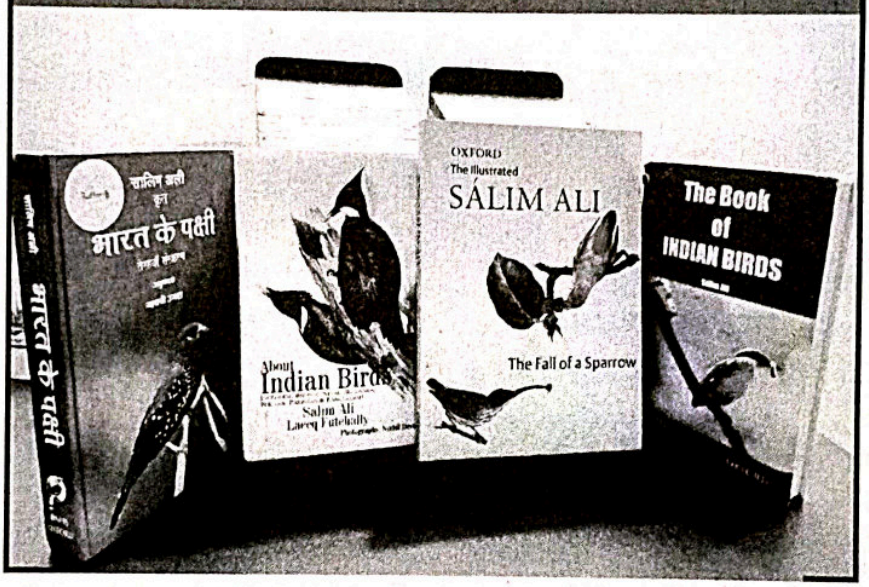

डॉक्टर सालिम अली ने न केवल पक्षियों पर शोध किया, बल्कि प्रकृति संरक्षण के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। उनके असाधारण प्रयासों के लिए, उन्हें 5 लाख का अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था, लेकिन उन्होंने सारा पैसा बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी को दान कर दिया। भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 1958 में पद्म भूषण और 1976 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

कैंसर से लंबी लड़ाई के बाद 20 जून 1987 को 90 वर्ष की आयु में डॉक्टर सालिम अली का इंतिक़ाल हो गया। उन्होंने अपने जीवन में ऐसे कीर्तिमान स्थापित कर दिए जिसे कोई भी अभी तक तोड़ नहीं पाया है। डॉक्टर सालिम अली की याद में हर वर्ष 12 नवम्बर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाया जाता है। ■■

गर्मियों में लू से बचाएं ख़ुद को

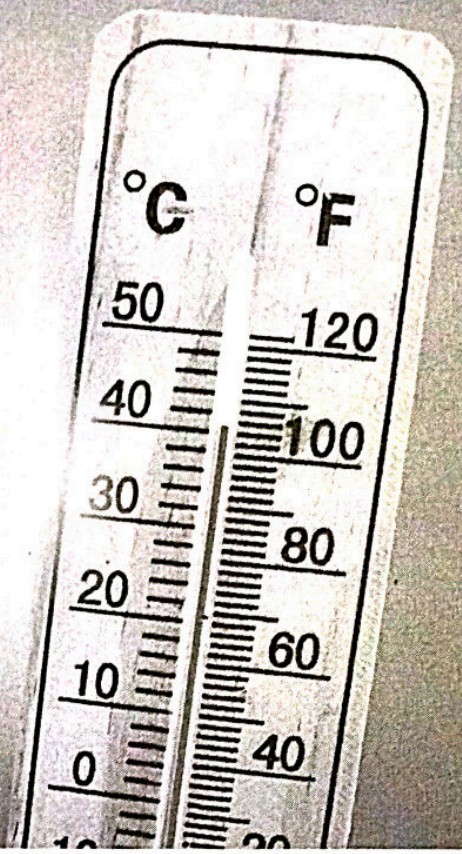

सेहत



संपादन प्रभाग

चिलचिलाती धूप, तपती गर्मी और लू के थपेड़े। इस बार इतनी भीषण और जानलेवा गर्मी पड़ रही है कि बचाव ही उपाय है। इस चिलचिलाती गर्मी में सबसे बड़ी समस्या है लू लगना। ऐसे में उन लोगों के लिए तो और भी दिक़्क़त है जिनका सारा दिन बाहर धूप में ही निकलता है। लू से शरीर में गर्मी, ख़ुश्की और थकावट महसूस होती है, शरीर में सूजन, हीट रैश, शरीर में अकड़न और बेहोशी आदि कीं समस्या भी सामने आती हैं। गर्मी में जब हम अधिक शारीरिक गतिविधि करते हैं और कम पानी पीते हैं तो लू लगने का ख़तरा सबसे ज़्यादा मंडराता है। गर्मी में जब शरीर के अंदर के द्रव सूखने लगते हैं तो शरीर से पानी और नमक की कमी हो जाती है और लू लगने का ख़तरा बढ़ जाता है।

लक्षण : वैसे तो लू किसी को भी लग सकती है, लेकिन धूप में काम करने वाले इसका ज़्यादा शिकार होते हैं। गर्मी में आमतौर पर पसीना आने से कूलिंग हो जाती है, लेकिन लू के मरीज़ की पहचान यह है कि उसे पसीना बिल्कुल नहीं आता। नाड़ी की गति अधिक बढ़ जाने के कारण व्यक्ति के शरीर का तापमान 101-105 तक हो जाता है और शरीर तेज़ तपने लगता है जोकि लगातार रहता है, घटता नहीं। इससे सिर दर्द, चक्कर आना, जी मिचलाना, अचानक दौरा पड़ना, देखने में परेशानी होना, बेहोशी छाना, लो ब्लड प्रेशर, हार्ट बीट तेज़ होना लेकिन जैसे लक्षण सामने आते हैं। कई बार तो बेहोशी तक भी आ जाती है।

गर्मी में जब हम अधिक शारीरिक गतिविधि करते हैं और कम पानी पीते हैं तो लू लगने का ख़तरा सबसे ज्यादा मंडराता है। गर्मी में जब शरीर के अंदर के द्रव सूखने लगते हैं तो शरीर से पानी और नमक की कमी हो जाती है और लू लगने का खतरा बढ़ जाता है।

प्राथमिक उपचार-जानकारों के अनुसार कोशिश करें कि तेज़ धूप में न जाएं यदि बहुत ज़रूरी हो तो शरीर को ढक्कर और कैप लगाकर ही जाएं। फिर भी यदि लू लग जाए तो पीड़ित व्यक्ति को पहले किसी ठंडी व खुली जगह पर बैठा या लेटा दें, जिससे शरीर का तापमान सामान्य हो जाए। रोगी के शरीर को थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गीले तौलिये से पोंछें। यदि लू की समस्या बहुत अधिक गंभीर हो चुकी हो

कोशिश करें कि तेज धूप में न जाएं यदि बहुत जरूरी हो तो शरीर को ढककर और कैप लगाकर ही जाएं। फिर भी यदि लू लग जाए तो पीड़ित व्यक्ति को पहले किसी ठंडी व खुली जगह पर बैठा या लेटा दे, जिससे शरीर का तापमान सामान्य हो जाए। रोगी के शरीर को थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गीले तौलिये से पोंछें।

तो रोगी के पूरे शरीर को ठंडे पानी से भीगो कर एक चादर से लपेटना चाहिए।

घर से पानी या कोई ठंडा शरबत पीकर बाहर निकलें, जैसे आम पना, शिकंजी, बेल का शर्बत, ख़स का शर्बत। कच्ची लस्सी (दूध एक हिस्सा और पानी चार हिस्सा) गर्मी को मारता है। ख़ाली पेट बाहर न जाएं और ज़्यादा देर भूखे रहने से बचें, धूप में निकलने से पहले पानी की बोतल साथ में लेकर निकलें। गर्मी के दिनों में बार-बार पानी पीते रहना चाहिए। ख़रबूज़े और तरबूज़ में पानी की मात्रा अधिक होती है इसलिए इसका ज़्यादा सेवन करें।

पानी में नींबू व नमक मिलाकर दिन में दो-तीन बार पीते रहने से लू नहीं लगती, याद रखें इसमें चीनी नहीं डालनी। तेज़ धूप से आते ही और ज़्यादा पसीना आने पर फ़ौरन ठंडा पानी नहीं पीना चाहिए और एसी या कूलर के पास न बैठे। पानी में इमली डाल कर उबाल लें, 15 मिनट के बाद इसे मैश करें और छानकर उसमें नमक और पानी मिलाकर पीने से गर्मी का बुख़ार सही हो जाता है।

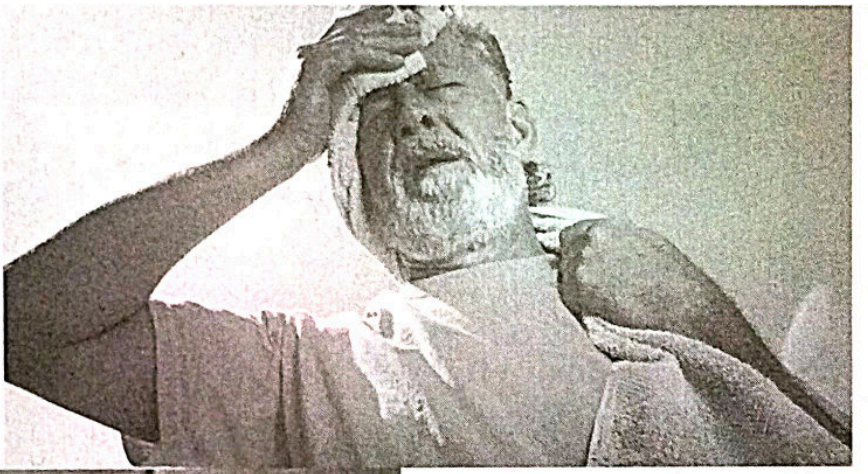



इसके अलावा गन्ने का जूस, नारियल पानी भी लाभदायक है। ठंडा दूध और दही ज़्यादा मात्रा में लें।

चिलचिलाती धूप और तेज़ गर्म हवाओं यानी लू के बीच घर से बाहर निकलना किसी चुनौती से कम नहीं होता है। इसके अलावा गर्मियों में ज़्यादा पसीना आने से शरीर में पानी की कमी भी हो जाती है, जिसकी वजह से थकान और कमज़ोरी महसूस होने लगती है। यही कारण है कि गर्मियों में तरल पदार्थों का सेवन करने की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही ऐसे मौसमी फलों को नियमित अपनी डाइट में शामिल करना चाहिए जिनमें पानी की मात्रा ज़्यादा होती है। अगर आप अपनी डाइट में इन चीज़ों को शामिल करेंगे तो लू की चपेट में आने से बचे रहेंगे–

आम का पना : गर्मियों को आम का मौसम भी कहा जाता है। बाज़ारों में

कच्चे-पके आमों से ठेलियां लदी हुई नज़र आती हैं। लू लगने से बचना है तो धूप में निकलने से पहले या धूप से आने के बाद आम पना पिएं। यह शरीर को ठंडा रखता है। कच्चे आम को कुकर में उबाल लें और ठंडा होने पर इनके छिलके उतारें। गूदे-गूदे को पानी, ज़ीरा, शक्कर व एक चुटकी काले नमक के साथ पीस लें। लू लगने पर दिन में कई बार आम का पना पीने से राहत मिलती है।

प्याज़ : लू से बचाव के लिए प्याज़ का सेवन बहुत फ़ायदेमंद माना जाता है। कच्ची प्याज़ खाने से शरीर की गर्मी निकल जाती है। इसके अलावा आपने



कई बार अपनी दादी-नानी से सुना होगा कि घर से बाहर निकलने के पहले प्याज़ का टुकड़ा अपने पास रख लेना चाहिए। ये दादी-नानी के समय का सुपरहिट नुस्ख़ा है। इसके अलावा आप सलाद में भी कच्ची प्याज़ खा सकते हैं।

इमली : लू लगने से अगर बुख़ार होता है तो इमली के सेवन से इसमें राहत मिलती है। लू लगने पर इमली के पानी में शक्कर मिलाकर दिन में कई बार पीने से जल्द आराम मिलता है।

छाछ : गर्मियों में छाछ का सेवन ना सिर्फ़ शरीर को ठंडा रखने में मदद करता है, बल्कि बहुत अधिक प्यास को शांत करने के लिए बेहतरीन ड्रिंक है। गर्मियों में डीहाइड्रेशन से बचने के लिए छाछ ज़रूर पीना चाहिए। इस मौसम में अपच की समस्या होना भी आम है, इसके लिए भी छाछ बहुत फ़ायदेमंद है।

बेल का शरबत : गर्मियों में बेल (Wood Apple) भी ख़ूब मिलते हैं। बाहर से सख़्त और अंदर से नरम बेल, लू से बचाने में कारगर है। इसके लिए आप बेल का शरबत बनाकर पी सकते हैं।

पुदीना : आमतौर पर घरों में पुदीने का इस्तेमाल रायता, चटनी, लेमन ड्रिंक, सब्ज़ी आदि में किया जाता है। यह खाने की चीज़ों में फ्लेवर डालने के साथ सेहत के लिए भी बहुत फ़ायदेमंद होता है। गर्मियों में अपनी डाइट में पुदीना ज़रूर शामिल करें।

खीरा : इन दिनों ख़ूब खीरा आता है। बॉडी को हाइड्रेटेड रखने में खीरा काफ़ी मददगार होता है। इसके साथ ही ये बॉडी डिटॉक्स भी करता है। विटामिन ए, बी. और के. से भरपूर खीरा शरीर में पानी के स्तर को संतुलित बनाए रखने में मदद करता है।

मसालेदार भोजन का ज़्यादा सेवन न करें : गर्मी में बहुत अधिक तेल और मसालेदार भोजन करने से बचना चाहिए। लू से बचने के लिए घर का बना फ्रेश खाना खाएं, साथ ही डाइट में मौसमी हरी सब्ज़ियों और फलों को ख़ूब शामिल करें। ■■



डिजिटल मार्केटिंग : एक उभरता हुआ करियर विकल्प

करियर



संपादन प्रभाग

अब भारत में डिजिटल मार्केटिंग एक उभरता हुआ करियर ऑप्शन बन गया है। भारत में डिजिटल मार्केटिंग तो काफ़ी समय से हो रही है, लेकिन इसे जन-सामान्य की तरफ़ से एक करियर की तरह मान्यता नहीं मिल पाई थी। इसकी वजह थी रोज़गार। डिजिटल मार्केटिंग में करियर बनाने को लेकर चुनिंदा युवा ही उत्सुक रहते थे, लेकिन जब से कार्पोरेट घरानों ने डिजिटल मार्केटिंग को गंभीरता से लिया और अपने बिजनेस में ग्रोथ को बढ़ते हुए देखा, तो उन्होंने इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में रोज़गार निकालना शुरू किया।

अब हर कंपनी डिजिटल माध्यमों से व्यापार को बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। ऐसे में मार्केटिंग के क्षेत्र की दखल यहां भी बढ़ी है, और इस वजह से मार्केटिंग प्रोफ़ेशनल्स के लिए यहां अवसर भी बढ़े हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वर्ष 2025 तक डिजिटल मार्केटिंग का बाज़ार बढ़कर 160 अरब डॉलर का हो जाएगा, क्योंकि अब बड़े से लेकर छोटे व्यापारी और कंपनियां डिजिटल मार्केटिंग का सहारा ले रही हैं। इसीलिए इस क्षेत्र में रोज़गार के अवसर बन रहे हैं। अच्छी बात यह है कि यहां जितने मौक़े फ्रेशर के लिए है, उतने ही अवसर मार्केटिंग प्रोफ़ेसनल्स के लिए भी हैं। चूंकि डिजिटल मार्केटिंग ऑनलाइन मार्केटिंग से काफ़ी अलग है, इसलिए इसका विस्तार भी ज़्यादा हो रहा है।

डिजिटल मार्केटिंग में करियर बनाने को लेकर चुनिंदा युवा ही उत्सुक रहते थे, लेकिन जब से कार्पोरेट घरानों ने डिजिटल मार्केटिंग को गंभीरता से लिया और अपने बिजनेस में ग्रोथ को बढ़ते हुए देखा, तो उन्होंने इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में रोज़गार निकालना शुरू किया।

डिजिटल मार्केटिंग क्या है?

डिजिटल मार्केटिंग में उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए विविध डिजिटल चैनलों को माध्यम बनाकर उत्पाद एवं सेवाओं का प्रचार और व्यापार किया जाता है।

डिजिटल मार्केटिंग में इंटरनेट ही नहीं, एसएमएस और एमएमएस, सोशल मीडिया के मंचों, डिस्प्ले एडवरटाइजिंग, सर्च इंजन मार्केटिंग आदि का इस्तेमाल किया जाता है। अभी यह

उभरता हुआ क्षेत्र है, जिसमें लगातार नए प्रयोग देखने में आ रहे हैं, लेकिन, इसमें कोई शक नहीं कि आप इसका कोर्स करके मार्केटिंग की डिग्री को और लाभदायी बना सकते हैं। इससे आप आज के दौर के मुताबिक़ बेहतर तैयार हो सकते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग में कैसे काम होता है?

इस क्षेत्र में आपको ईमेल मार्केटिंग, पे-पर-क्लिक एडवरटाइजिंग (पीपीसी), सर्च इंजन ऑप्टीमाइजेशन(एसईओ), सर्च इंजन मार्केटिंग (एसईएम), डिस्प्ले एडवरटाइजिंग, सोशल मीडिया मार्केटिंग (एसएमएम), रेडियो एडवरटाइजिंग, कंटेंट मार्केटिंग से संबंधित काम मिलेंगे। यहां आपको डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजर, सोशल मीडिया मार्केटर, कंटेंट मार्केटर, ऑटोमेशन एक्सपर्ट, पेड मीडिया स्पेशलिस्ट, डाटा एनालिस्ट, वेब डेवलपर, एफिलिएट मार्केटिंग, ऑनलाइन पब्लिक रिलेशन से संबंधित ज़िम्मेदारियां मिलेंगी।

रोज़गार के अवसर

डिजिटल मार्केटिंग में नौकरी के लिए कोई सीमाएं नहीं है। टूरिज़्म, बैंकिंग, रिटेल, मीडिया, मल्टीनेशनल और अन्य कंपनियों के डिजिटल मार्केटिंग विभाग, स्टार्टअप, आईटी और आईटीईएस (आईटी समर्थित सेवाएं), पीआर और एडवरटाइज़िंग, कंसल्टेंसी, मार्केट रिसर्च, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज़ हास्पिटेलिटी आदि कंपनियों को डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर की ज़रूरत होती है। चूंकि डिजिटली तकनीक ग्लोबल मौक़े देती है, इसीलिए मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी का मौक़ा मिल सकता है। एसईओ, कंटेंट मार्केटिंग, इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग ख़ासतौर पर प्रचलित है।

कोर्स कैसे करें?

डिजिटल मार्केटिंग कोर्स के लिए स्नातक डिग्री से अच्छे अवसर बन सकते हैं। स्नातक के बाद सर्टिफिकेट कोर्स के साथ इसमें शुरुआत कर सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग के कई

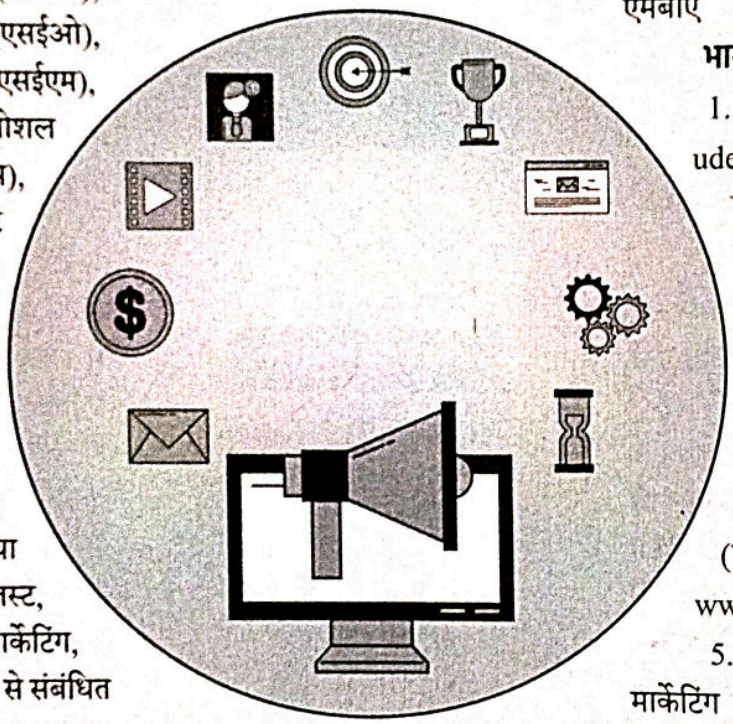

निशुल्क ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध हैं। इसमें अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स भी उपलब्ध है। एनआईआईटी डिजिटल मार्केटिंग और ब्रांडिंग में पीजी प्रोग्राम करा रहा है। मणिपाल प्रोलर्न का पीजी सर्टिफाइड प्रोग्राम है। बहुत से संस्थान बीबीए में डिजिटल मार्केटिंग स्पेशलाइज़ेशन करा रहे हैं।

कुछ प्रमुख कोर्स

- सर्टिफाइड डिजिटल मार्केटिंग मास्टर्स कोर्स
- डिजिटल मार्केटिंग में सर्टिफिकेशन प्रोग्राम
- ऑनलाइन मार्केटिंग एंड सर्टिफिकेट ट्रेनिंग
- निजी मॉड्यूल में सर्टिफिकेशन प्रोग्राम, जैसे-एसईओ, एसईएम, डेटा माइनिंग, एनालिटिक्स, एसएमएस, ई-मेल मार्केटिंग आदि।
- डिजिटल मार्केटिंग प्रोफ़ेशनल डिप्लोमा
- एसईएम में प्रोफ़ेशनल डिप्लोमा
- डिजिटल मार्केटिंग में बीबीए, एमबीए

भारत में प्रमुख संस्थान

1. उडेमी- https://www.udemy.com/
2. कोर्सरा-https://www.coursera.org/
3. ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन-http://www.aima.in/
4. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (एनआईआईटी)-https://www.niit.com/
5. दिल्ली स्कूल ऑफ़ इंटरनेट मार्केटिंग
6. एजुकार्ट दिल्ली
7. आईआईएम के विविध केंद्रों से डिजिटल मार्केटिंग से संबंधित ऑनलाइन प्रोग्राम्स-https://www.iima.ac.in/

आमदनी

डिजिटल मार्केटर को शुरुआत में 4 से 5 लाख सालाना पैकेज आराम से मिल जाता है। अनुभव के बाद डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर के पद पर प्रतिमाह 2 लाख रुपये तक की आय भी संभव है। जानकारों के अनुसार यदि आप यह भविष्य की सबसे तेज़

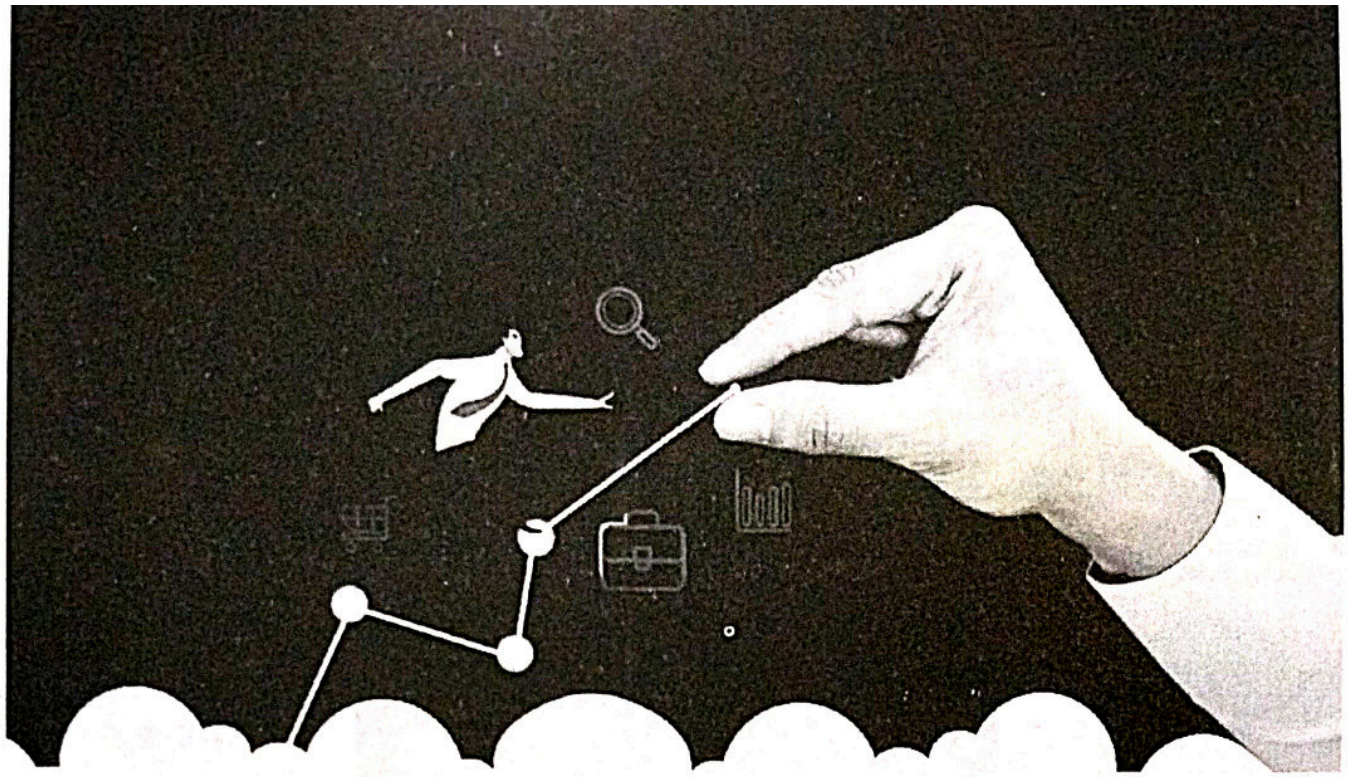

विस्तार करने वाली इंडस्ट्रीज़ में से एक का हिस्सा बनना चाहते हैं, तो डिजिटल मार्केटिंग का विकल्प आपके लिए ही है। इस क्षेत्र में आसानी से ऑनलाइन कोर्स कर सकते हैं। इसीलिए छात्र तथा कामकाजी पेशवर भी स्किल अपग्रेडेशन करके लाभ उठा सकते हैं और अपने लिए करियर की संभावनाओं में सुधार कर सकते हैं। इस काम को फ्रीलांसर के रूप में भी किया जा सकता है और डिजिटल मार्केटिंग एजेंसियों या कंपनियों के साथ फुल टाइम भी। संचार कौशल, मार्केटिंग में रुचि रखने वाले और डिजिटल मार्केटिंग टूल और तकनीक के ज्ञान वाले लोगों के लिए नए दौर का लाभदायी अवसर है।

जानकारों का मानना है कि डिजिटल मार्केटिंग का क्षेत्र बहुआयामी और रोज़ विकसित होने वाला क्षेत्र भी है। इंटरनेट यूज़र रोज़ बढ़ रहे हैं और ऑनलाइन बिजनेस

डिजिटल मार्केटिंग में नौकरी के लिए कोई सीमाएं नहीं है। टूरिज़्म, बैंकिंग, रिटेल, मीडिया, मल्टीनेशनल और अन्य कंपनियों के डिजिटल मार्केटिंग विभाग, स्टार्टअप, आईटी और आईटीईएस (आईटी समर्थित सेवाएं), पीआर और एडवरटाइजिंग, कंसल्टेंसी, मार्केट रिसर्च, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज हास्पिटेलिटी आदि कंपनियों को डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर की ज़रूरत होती है। चूंकि डिजिटली तकनीक ग्लोबल मौक़े देती है, इसीलिए मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी का मौक़ा मिल सकता है। एसईओ, कंटेंट मार्केटिंग, इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग ख़ासतौर पर प्रचलित है।

भी। इसीलिए यह एक अच्छा करियर ऑप्शन है। आपको ख़ुद को नए डिजिटल मंचों से अपडेट रखना होगा। डिजिटल मार्केटिंग से पैसे कमाने के कई रास्ते हैं, आप कोर्स करने के बाद किसी कंपनी के साथ एसोसिएट के रूप में काम कर सकते हैं। कंपनी के फुलटाइम एम्प्लोयी बनकर अच्छा ख़ासा पैसा कमा सकते हैं। यदि आप नौ से पांच की नौकरी नहीं करना चाहते है, तो फ्रीलांसर (as a freelancer) बनकर भी काम कर सकते हैं। कई छोटे बिजनेस संचालकों को डिजिटल मार्केटर की आवश्यकता होती है, वह इसके लिए बड़ी कंपनी के बजाय किसी फ्रीलांसर को काम देना पसंद करते हैं। ऐसे में आपके पास अवसर होता है। फ्रीलांसर के तौर पर काम करके भी लाखों रुपये कमाने वाले भी बड़ी संख्या में मौजूद हैं, बस इसके लिए आपको विषय विशेषज्ञ होना आवश्यक है। ■■



और जवाब मिल गया...

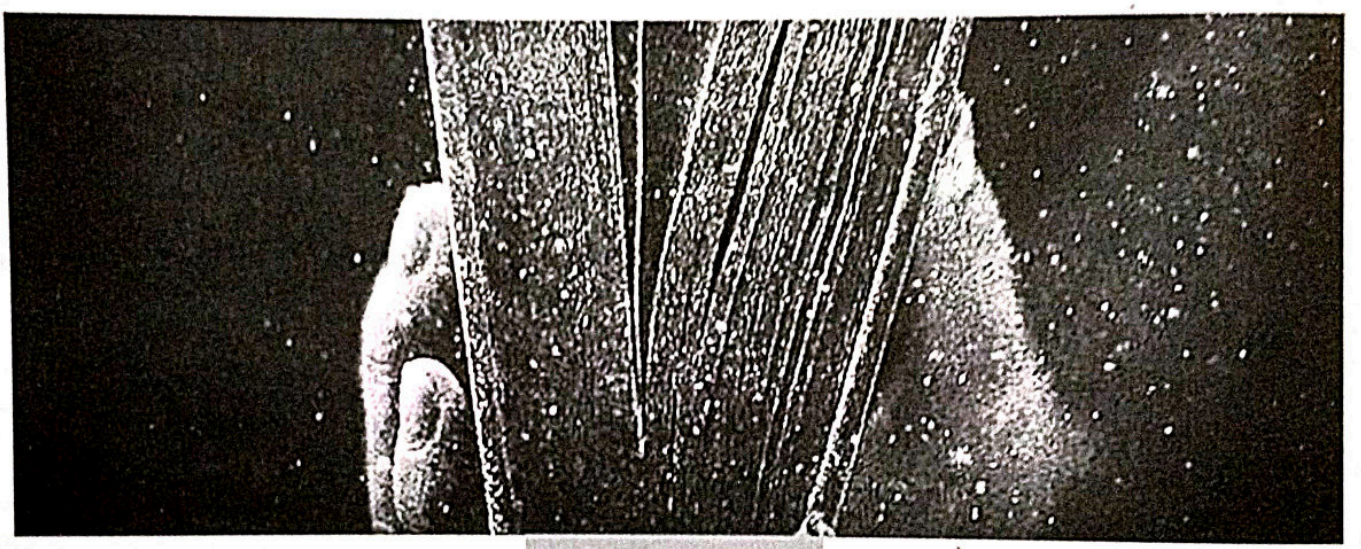

कहानी



लियोपोल्ड

सितम्बर सन् 26 में एक बार अपनी पत्नी के साथ मैं बर्लिन की भूमिगत गाड़ी पर सवार था कि यकायक मेरी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो मेरी सामने वाली सीट पर बैठा हुआ था, वह कोई धनी और ख़ुशहाल व्यापारी जान पड़ता था। एक छोटा-सा सुन्दर बैग उसकी गोद में रखा था और हीरे की एक बड़ी-सी अंगूठी उसकी उंगली में नज़र आ रही थी। तुरन्त मुझे यह विचार हुआ कि यह वास्तव में उस ख़ुशहाली और स्मृद्धि का पता देती है जो उन दिनों मध्य यूरोप में हर व्यक्ति में देखी जा सकती थी। इस ख़ुशहाली से पहले मुद्रा-स्फीति के कुछ साल बीते थे, जिन्होंने आर्थिक जीवन को बिल्कुल उलट-पलट दिया था और बदहाली और बुरी शक्ल में रहना ही नियम-सा बन गया था, पर इस समय तो लोगों की बड़ी संख्या अच्छा खाती और अच्छा पहनती है। इसलिए यह व्यक्ति जो मेरे सामने बैठा हुआ था, लोगों से कुछ भिन्न और नया न था, पर जब मैंने उसके चेहरे पर नज़र डाली तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं किसी सन्तुष्ट और प्रसन्न चेहरे को नहीं देख रहा हूं, वह मुझे बेचैन और असन्तुष्ट-सा दीख पड़ा, सिर्फ़ बेचैन ही नहीं, बल्कि बहुत ही ज़्यादा दुखी और भाग्यहीन भी, उसकी नज़रें खोई हुई-सी शून्य में घूर रही थीं और उसके होंठ के दोनों किनारे किसी कष्ट से भिचे हुये थे-एक मानसिक कष्ट।

अगर इसे शिष्टाचार के विरुद्ध और बदतमीज़ी न समझी जाये तो मैं कहूं कि मैंने अपना मुंह उसकी ओर से फेर लिया। उसके पहलू में एक शिष्ट महिला भी बैठी हुई थी। उनके चेहरे पर भी बेचैनी और असन्तोष के चिन्ह थे, मानो

वे किसी ऐसी चीज़ के बारे में सोच रही थीं, जिसके सोचने से उन्हें कष्ट हो रहा हो। एक फीकी मुस्कान उनके होंठों पर फैली हुई थी, जिसके बारे में मेरा विचार यह है कि इसका संबंध आदत से है। फिर मैंने कम्पार्टमेन्ट में और लोगों की ओर नज़र दौड़ाई और उन सबके चेहरों को निगाहों से टटोलने लगा, जो बिना अपवाद के खाते-पीते दीख पड़ रहे थे, पर हर चेहरे पर मैंने अनजाने दुख की एक झलक देखी, इतना अनजान कि ख़ुद उन सबको भी इसका एहसास न होगा।

वास्तव में यह एक विचित्र बात थी। एक जगह पर इतने दुखी चेहरों को देखने का मौक़ा मुझे इससे पहले कभी नहीं हुआ था, या यूं कहिये कि इससे पहले मैंने इसकी कोशिश नहीं की थी। इस बात ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला कि मैंने इसका वर्णन अपनी पत्नी से किया। वह भी एक दक्ष कलाकार की तरह तमाम लोगों के चेहरों को देखने लगी। फिर आश्चर्य के साथ मेरी ओर रुख़ करके कहने लगी–

मैं बर्लिन की भूमिगत गाड़ी पर सवार था कि यकायक मेरी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो मेरी सामने वाली सीट पर बैठा हुआ था, वह कोई धनी और ख़ुशहाल व्यापारी जान पड़ता था। एक छोटा-सा सुन्दर बैग उसकी गोद में रखा था और हीरे की एक बड़ी सी अंगूठी उसकी उंगली में नज़र आ रही थी। तुरन्त मुझे यह विचार हुआ कि यह वास्तव में उस ख़ुशहाली और स्मृद्धि का पता देती है जो उन दिनों मध्य यूरोप में हर व्यक्ति में देखी जा सकती थी।

"आप बिल्कुल सही कहते हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो वे सब जहन्नम की तकलीफ़ें सह रहे हों, मैं यह सोचती हूं कि इन पर जो बीत रही है, उन्हें इसकी ख़बर भी है या नहीं।"

मैं जानता था कि उनको इसकी ख़बर नहीं है, अगर ख़बर होती तो वे इस तरह अपने जीवन और शक्ति को नष्ट न करते, उन तथ्यों पर ईमान ले आते, जो जीवन के बिखरे अंगों को जोड़ देते हैं, और किसी मक़सद के बिना, जीवन-स्तर ऊंचा उठाने, अधिक से अधिक भौतिक साधनों को बटोर लेने और ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त हासिल कर लेने के लिए बहुत आगे न निकल जाते।

बर्लिन में मेरा इरादा था कि पोलिटो-जागरिफ़िकल एकेडमी के लेक्चरों को पूरा कर लूं और साथ ही इस्लामी शास्त्रों का अध्ययन भी करता रहूं। पर क्या इस्लाम सच में, अल्लाह का सन्देश है या वह केवल एक बड़े आदमी के विवेक व चिन्तन का परिणाम है, जो ग़लती से पाक नहीं, यही प्रश्न मुझे बार-बार सता रहा था।

एक दिन जब मैं घर वापस आया तो सहसा मेरी नज़र मेज़ पर पड़ी। उस पर क़ुरआन की एक प्रति रखी हुई थी, जिसे मैं पढ़ता रहता था। मैं उसे बन्द करके किसी दूसरी जगह रखना ही चाहता था कि अनचाहे ही पृष्ठ खुला और मैंने देखा यह आयत लिखी हुई थी–

"बहलावे में रखा तुमको अधिक के लोभ ने, यहां तक कि तुम क़बरों में आ गये। अच्छी तरह सुन लो, जल्द ही तुम्हें (इस बहलावे का नतीजा) मालूम हो जाएगा, फिर अच्छी तरह सुन लो, तुम्हें इस बहलावे का नतीजा जल्द ही मालूम हो जाएगा। अच्छी तरह सुन लो अगर तुम अपना नतीजा निश्चित रूप से जानते होते तो कभी भी बहलावे में न आते। एक दिन तुम ज़रूर दोज़ख़ को अपनी आंखों से देख लोगे, फिर तुम उसे निश्चित रूप में भी ज़रूर ही देखोगे। फिर उस दिन (दुनिया की) नेमतों के बारे में तुम से पूछताछ भी ज़रूर होगी (कि कहां तक तुमने इन नेमतों का शुक्र अदा किया।)" (क़ुरआन : सूरा तकासुर)

मैं एक क्षण के लिए खो-सा गया। मेरा विचार है कि किताब मेरे हाथ में कांपने-सी लगी थी। फिर मैंने अपनी पत्नी से कहा–

"देखो, सुनो, क्या यह उसका जवाब नहीं है, जो रात को हमने रेल पर देखा था।"

"हां, सही है और बेहतर जवाब।" उसने कहा।

अब मैंने निश्चित रूप से यह समझ लिया कि यह किताब जो इस समय मेरे हाथ में है, अल्लाह (ईश्वर) ही की उतारी हुई है। वह यद्यपि आज से 1300 वर्ष पहले एक व्यक्ति को दी गई थी, पर इसमें सविस्तार एक ऐसी चीज़ की भविष्यवाणी थी जो हमारे इस पेचदार और मशीनी युग से अधिक स्पष्ट रूप में किसी और युग में सामने न आई थी।

'तकासुर' अर्थात् माल व दौलत का लोभ और उसके लिए दौड़-भाग इतिहास के हर युग में पाया जाता रहा, पर इतना नहीं कि वह केवल चीज़ों को जमा करने का शौक़ बन जाए या एक ऐसा खिलौना या बहलावा बन जाए जो किसी और सत्य की ओर देखने ही न देता हो। धन और सत्ता को हथियाने का एक ऐसा रोग पैदा हो गया है, जिसका कोई इलाज नहीं। कल से ज़्यादा आज और आज से ज़्यादा कल, एक भूत है, जो लोगों के सिरों पर सवार उनको इन भड़कीले 'उद्देश्यों' की ओर कोड़े मार-

मारकर भगा रहा है, जो दूर से बहुत शानदार दीख पड़ते हैं, पर हाथ में आने के बाद पानी के बुलबुले की तरह ग़ायब हो जाते हैं, यहां तक कि वह समय आ जाता है, जिसके बारे में क़ुरआन कहता है कि अगर वे निश्चित ज्ञान रखते तो ज़रूर ही जहन्नम देख लेते।

अब मुझे विश्वास हो गया कि क़ुरआन किसी मनुष्य की बुद्धि की उपज नहीं है, जो एक दूर के अरब प्रायद्वीप में इतिहास के किसी युग में था, इसलिए कि यह मनुष्य लाख समझदार और बुद्धिमान सही, पर फिर भी वह इस धिक्कार की भविष्यवाणी नहीं कर सकता था जो बीसवीं शताब्दी की विशेषता है।

इन विचारों का जो नतीजा निकलना चाहिए था, वही हुआ। मैं अपने एक भारतीय मुसलमान दोस्त के पास गया, जो उस समय बर्लिन में मुसलमानों की संस्था के अध्यक्ष थे और उनसे इस्लाम अपनाने सरीखी इच्छा को प्रकट किया। उन्होंने अपना दाहिना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने भी अपना दाहिना हाथ उनके हाथ पर रख दिया और दो गवाहों की मौजूदगी में मैंने कहा–

"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।"

"मैं गवाही देता हूं कि एक अल्लाह के अलावा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके (आख़िरी) रसूल हैं।"

मेरे दोस्त ने कहा–

"आपका नाम लियोपोल्ड (Leopold) है। ल्यु का अर्थ यूनानी में शेर है, इसलिए हम आज से आपको 'मुहम्मद असद' कहेंगे।"

कुछ हफ़्ते बाद मेरी पत्नी ने भी इस्लाम स्वीकार किया।

जब मैंने अपने पिता को इस्लाम स्वीकार करने की सूचना दी। तो उन्होंने मेरे पत्र का उत्तर न दिया। इसके बाद मैंने उनको एक दूसरा पत्र लिखा, जिसमें मैंने उनको यह लिखा कि इस्लाम अपनाने के कारण उनके लिए मेरे रवैये या मुहब्बत में कोई अंतर नहीं आया है, बल्कि इस्लाम की मुझे हिदायत है कि मैं पिता का सबसे अधिक आदर करूं और उनके साथ अच्छा व्यवहार करूं। पर इस ख़त का भी मुझे कोई उत्तर न मिला।

मेरे पिता पर धर्म का कोई गहरा प्रभाव न था और मेरा विचार है कि जितना वह मुझे अपने माहौल और अपने कल्चर का (जिसमें वह पले-बढ़े थे और जिससे उनको मुहब्बत थी) द्रोही समझते थे, उतना वह मुझे अपने धर्म का द्रोही नहीं समझते थे।

इस्लाम अपनाने के कुछ ही दिनों बाद मैंने और मेरी पत्नी ने यूरोप को सदा के लिए छोड़ दिया, इसलिए कि वहां रहना अब हमारे लिए एक बोझ-सा बन गया था।

सन् 1927 ई० को जनवरी के शुरू में मैं अपनी पत्नी और छोटे बच्चे के साथ पूरब के लिए रवाना हो गया। इस बार मुझे ऐसा लग रहा था, मानो अब मैं कभी वापस न हूंगा।

कई दिन रूम सागर (Mediterranian Sea) की यात्रा में बीत गये। नीचे पानी ही पानी था और ऊपर आसमान, बस कभी-कभी बहुत दूरी पर ज़मीन के कुछ किनारे दिखाई पड़ जाते थे, और कभी-कभी उन जहाज़ों का धुंआ दीख पड़ जाता था, जो इस रास्ते से गुज़रते होते।

यूरोप अब हमारी नज़रों से ओझल हो चुका था और कम से कम हमारे लिए बिल्कुल भुलाया गया-सा भी।

चूंकि यह जहाज़ सुदूर पूर्व को जा रहा था, इसलिए इसके अधिक यात्री चीनी थे, छोटे कारीगर और व्यापारी, जो यूरोप में कई साल की कड़ी मेहनत के बाद अब अपने देश चीन को वापस हो रहे थे। इनके अलावा इसमें यमन के लोग भी थे, जो मार्सिल्ज़ से सवार हुये थे, वे भी अपने वतन वापस हो रहे थे। यूरोपीय बन्दरगाहों की बू-बास अभी तक उनके दिमाग़ों में बसी हुई थी, मानो वे अभी तक उन्हीं दिनों में थे जब उनके सांवले हाथ इंग्लैंड, अमेरिका और हॉलैंड की भट्ठियों में कोयला झोंकने का काम करते थे। वे यूरोपीय नगरों को बराबर याद कर रहे थे–न्यूयार्क, ब्यूनस आयर्स और कभी-कभी हैम्बर्ग वहां एक अनजाने सुन्दर भविष्य की खोज ने उन्हें पहले अपनी ओर खींच लिया था, वरन् पहले वह अदन की बन्दरगाह में जहाज़ में कोयला झोंकने और भट्ठी सुलगाने का काम करते थे, लेकिन अब फिर जहाज़ जल्दी ही अदन पहुंच रहा है, जहां उनके ये न भुलाये जाने वाले दिन व रात और बीती कहानियां बन जायेंगे। वे लोग हैट के बजाय अमामा और कूफ़िया इस्तेमाल करना शुरू कर देंगे, हर व्यक्ति अपने गांव की राह ले लेगा। पर क्या जिस तरह वे निकले थे, वैसे ही वापस हो रहे हैं या वतन छोड़ने के बाद अब वे, वे नहीं रहे जो पहले थे, पश्चिम ने उन पर पूरा क़ब्ज़ा जमा लिया था या केवल उनकी भावनाओं को छूकर रह गया था? सच तो यह है कि इस समस्या ने मेरे विचारों को इतना उलझा दिया कि मैं इस पर नये सिरे से और बड़े पैमाने पर सोचने पर मजबूर हो गया।

इस्लामी जगत और यूरोप कभी एक-दूसरे से इतने क़रीब नहीं हुए थे, जितने आज। और यही क़रीब होना उस छिपे और खुले संघर्ष का कारण है, जो आज इन दोनों में पाया जाता है। इसका कारण यह है कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या (मर्दों-औरतों) की आत्माएं पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से धीरे-धीरे

सुकड़ती और सिमटती जा रही है, अपनी उस पिछली भावना से वे दूर होते जा रहे हैं कि आर्थिक स्तर में सुधार और उन्नति केवल मनुष्य की आध्यात्मिक आवश्यकताओं में सुधार और उन्नति का एक साधन है। वे उसी उन्नति के मोह का शिकार होते जा रहे हैं, जिसके कारण यूरोप तबाह हो रहा है। उन लोगों ने धर्म को सत्ता-चक्र की एक नीची आवाज़ समझना शुरू कर दिया है। इसलिए वे बजाय ऊपर उठने के और नीचे गिरते जा रहे हैं।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मुसलमान पश्चिम से कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकते, मुख्य रूप से औद्योगिक ज्ञान व कला के मैदानों में, इसलिए कि ज्ञान व कला का सीखना, यह कोई अच्छी चीज़ नहीं है, मुख्य रूप से उस सम्प्रदाय के लिए जिसके नबी ने उसे हर संभव साधन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का हुक्म दिया हो।

ज्ञान न पूर्वी है, न पश्चिमी, ज्ञानपूर्ण खोजें तो एक ऐसे सिलसिले की कड़ियां हैं जिसकी कोई सीमा नहीं और जिसमें पूरी मानव-जाति बराबर की साझीदार है। हर ज्ञानी व साइन्टिस्ट उन्हीं बुनियादों पर अपनी खोज की नींव रखता है, जो उसके अगलों ने तैयार की थी, भले ही वे उसकी जाति से संबंध रखते हों या किसी और जाति से। ऐसे ही एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक, एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक, एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता तक बनाव-सुधार और उन्नति का काम बराबर जारी रहता है, इसलिए कि अगर किसी विशेष युग या विशेष सभ्यता में ये काम पूरे किये जाएं तो यह कभी भी कहना सही न होगा कि वे उस काल या सभ्यता के लिए मुख्य हैं। ऐसा तो हो सकता है कि किसी समय में कोई दूसरी जाति, जो अधिक साहसी और बड़े हौसले वाली हो, ज्ञान-विज्ञान में बढ़-चढ़कर भाग ले, पर बहरहाल सभी इस काम में बराबर के हिस्सेदार हैं।

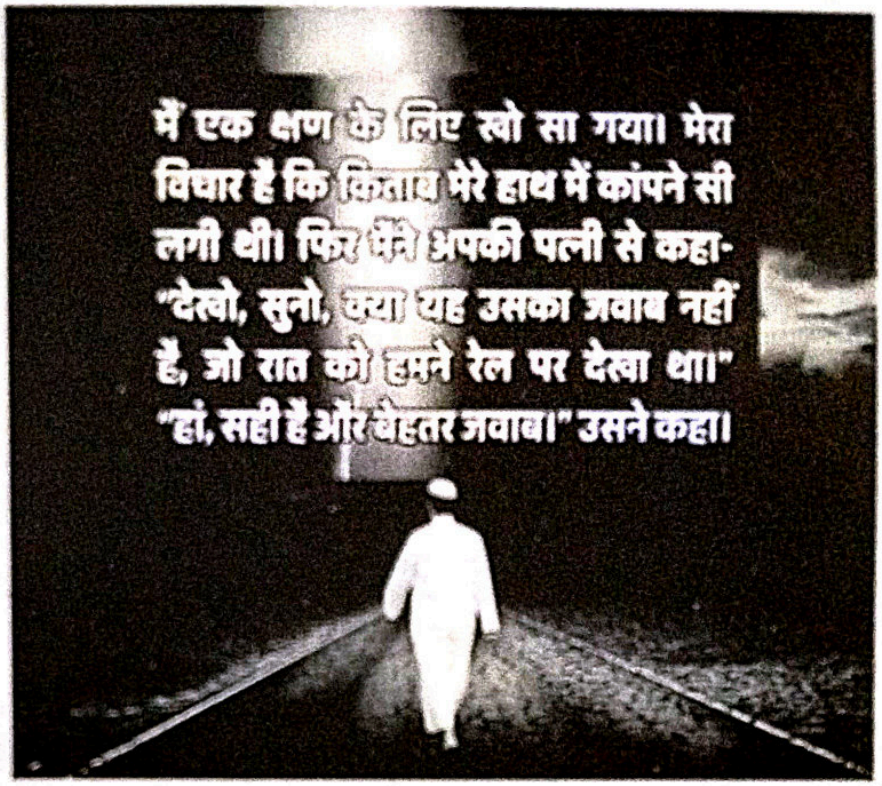

एक युग ऐसा भी आया था, जब मुसलमानों की संस्कृति व सभ्यता यूरोप की संस्कृति व सभ्यता से अधिक शानदार थी, उसने यूरोप को बहुत से क्रान्तिकारी औद्योगिक व कलात्मक आविष्कार दिये। इससे बढ़कर यह कि उसने यूरोप को उस व्यवहार के सिद्धान्त व मूल तत्व दिये जिस पर आज की सभ्यता और आज के विज्ञान की नींव है, पर इसके बावजूद जाबिर इब्ने हय्यान का केमिस्ट्री का ज्ञान अरबी नहीं कहलाया, ऐसे ही अलजबरा और ज्योमिटरी को इस्लामी ज्ञान नहीं कहा गया, हालांकि पहले का आविष्कारक ख़्वारिज़्मी है और दूसरे का कातिबानी और ये दोनों ही मुसलमान थे, ठीक उसी तरह आकर्षण सिद्धान्त को कोई अंग्रेज़ी ज्ञान नहीं कह सकता, यद्यपि उसका आविष्कारक अंग्रेज़ था। ये बड़े-बड़े काम और ये अहम खोजें, सच पूछिये तो मानव-जाति की मिली-जुली मीरास हैं।

ऐसे ही अगर मुसलमान जैसा कि उनका कर्तव्य है, औद्योगिक ज्ञान व कला के नये साधनों को अपनाते हैं तो वे ऐसा सिर्फ़ उन्नति व प्रगति की स्वाभाविक इच्छा व भावना से करते हैं, दूसरों के तजुर्बों और जानकारियों से फ़ायदा उठाने की स्वाभाविक इच्छा और भावना, पर अगर वे (और उन्हें इसकी ज़रूरत भी नहीं है) पाश्चात्य जीवन के रूप-रंग, रीति-नीति और सामूहिक विचारों व भावनाओं को अपनाते हैं तो इससे उन्हें तनिक भी फ़ायदा न होगा, इसलिए कि यूरोप उन्हें इस मैदान में जो दे सकेगा, वह इससे बेहतर नहीं होगा जो स्वयं उनकी सभ्यता और उनके धर्म ने उन्हें दिया है।

अगर मुसलमान तनिक साहस से काम लें, हौसले को ऊंचा उठायें और उन्नति को एक साधन और माध्यम के रूप में अपनाएं तो वे इस तरह न सिर्फ़ अपनी अन्दरूनी आज़ादी की हिफ़ाज़त कर सकेंगे, बल्कि शायद यूरोप के मनुष्य को जीवन के खोये हुये आनन्द रहस्य भी बता सकेंगे। ■■

तीसरी बार...

लघुकथा



रणविजय कुमार सिंह

एक बार जंगल के राजा शेर ने सभा बुलाई और कहा कि 'मैं राजा हूं क्या मेरा शिकार के लिए इधर-उधर घूमता अच्छा लगेगा ? अब से मेरे लिए शिकार का इंतिज़ाम मंत्रिमंडल करेगा।'

उसने सबसे शातिर मंत्री लोमड़ी को शिकार को लाने के लिए कहा। लोमड़ी समझदार थी। उसने एक गधे से जाकर कहा कि 'हे गर्दभ राज ! आपको शेर ने बुलाया है।'

गधा बोला–'मुझे मूर्ख समझती हो। मैं शेर के पास जाऊंगा, वो मुझे खा नहीं जाएगा।'

लोमड़ी ने समझाया कि, 'शेर पहले जैसा मांसभक्षी नहीं रहा। वह बदल गया। वह आपको अपना राज्य सौंपना चाहता है। आप चलें।'

गधा वाक़ई बेवक़ूफ़ होता है, आप सब जानते हैं। तो वह लोमड़ी के बहकावे में आकर चल पड़ा। जैसे ही शेर के दरबार में पहुंचा शेर ने झपटा मारा। गधा दुलत्ती मार कर भाग खड़ा हुआ लेकिन झपट्टे में शेर के हाथ गधे के कान लग गए।

शेर कान खाकर बोला–'कान से मेरा पेट कैसे भरेगा ? जाओ जल्दी से शिकार लेकर आओ।'

लोमड़ी फिर गई और गधे को कहने लगी–'आप भाग क्यों आए महाराज ?'

गधा बोला, 'अरे भागता नहीं तो क्या करता ? शेर तो मुझे खाने को तैयार था। मेरा कान उखाड़ लिया।'

लोमड़ी बोली–'रहे ना गधे के गधे। अरे कान इसलिए उखाड़े की, कान रहते हुए तुम्हारे सिर पर मुकुट कैसे रखते।

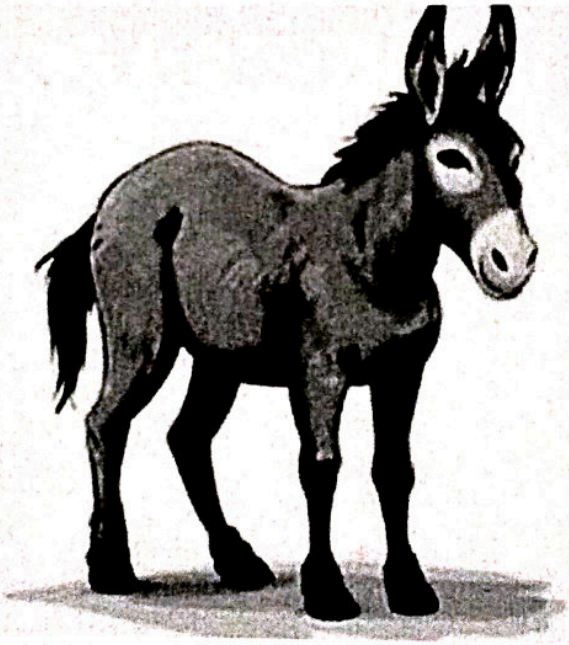

चलो, राजा बिना मुकुट अच्छा लगता क्या ?'

अब आप जानते हैं गधे तो गधे होते हैं, वह फिर चल पड़ा। जैसे ही दरबार में पहुंचा भूखे शेर ने फिर झपट्टा मारा, गधा फिर भाग लिया लेकिन भागते गधे की पूंछ शेर के मुंह में आ गई थी।

लोमड़ी तीसरी बार गधे के पास पहुंची और बोली–'अरे तुम तो अहमक़ हो, भाग क्यों आए ?'

गधा बोला–'अरे पहली बार कान, दूसरी बार पूंछ। शेर तो मुझे खाने की जुगत में था, नहीं तो मेरी पूछ क्यों उखाड़ता ?'

लोमड़ी मुंह बनाकर बोली–'सच में ही दुनिया तुम्हें गधा कहती है क्योंकि तुम हो ही मूर्ख। भले आदमी पूंछ के रहते तुम सिंहासन पर कैसे बैठते? तुम्हारा कान उखाड़ा तुम्हें मुकुट पहनाने के लिए।

दूसरी बार तुम्हारी पूंछ ताकि तुम्हें सिंहासन पर बैठने में दिक़्क़त न हो। चलो शेर तुम्हें वाक़ई राजा बनाएगा।'

गधा फिर जा पहुंचा। अबकी बार शेर को उसकी मौसी लोमड़ी ने सिखा- पढ़ा रखा था।

शेर बोला–'आओ गधे भाई आओ। तुम तो मेरे परिवार हो। मेरे सिंहासन पर तुम्हारा ही हक़ है।'

गधा बेचारा शेर की चिकनी-चुपड़ी बातें सुनकर शेर के पास चला गया। शेर ने लाड लड़ाने के ख़ातिर पहले उसके चेहरे पर हाथ फेरा, फिर गर्दन पकड़कर उसे मार डाला। तो मित्रों आपने देख लिया कि तीसरी बार गधे का क्या हाल हुआ।

बेताल ने कहानी सुनाकर पूछा–'राजन इस कहानी से तुम क्या समझे?' विक्रम बोला–'यह कहानी है। उसी तरीक़े की कहानी जैसे पंचतंत्र में हैं यानी जानवरों के माध्यम से इन्सानों को समझने हेतु। इसका उपदेश है–जो तीसरी बार मूर्ख बने वह गधा ही हो सकता है।' ■■

(साभार : प्रतिभा एक डायरी)



पारलौकिक जीवन

आख़िरी पन्ना

अबरार अहमद

परलोक की अवधारणा यह है कि जो कर्म मनुष्य इस दुनिया में करता है, परलोक में उसको वैसा ही बदला मिलेगा। जो लोग परलोक को नहीं मानते, उनके लिए यह जीवन थोड़ा-सा आनन्द है, फिर वे सब नरक में जाएंगे, जोकि बहुत ही बुरा ठिकाना है। इस्लाम धर्म में जिस प्रकार अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसके पैग़म्बरों और उसकी किताबों पर ईमान रखना फ़र्ज़ है, उसी प्रकार आख़िरत (परलोक) पर ईमान रखना भी अनिवार्य है।

इसके विपरीत जो लोग परलोक पर ईमान रखते हैं, और अपने रब से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, उन बाग़ों में वे हमेशा रहेंगे। यह ईश्वर की ओर से उनके लिए आतिथ्य सामग्री है।

जिस सरो-सामान पर ये लोग इतराते फिरते हैं, वह उनके कुछ काम न आएगा और उनको अल्लाह (ईश्वर) के सामने अकेले हाज़िर होना पड़ेगा। सब आख़िरत में अकेले-अकेले अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे।

अल्लाह यक़ीनन एक दिन मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा। जो कर्म उन्होंने किये हैं वे सब एक खुली किताब में दर्ज हैं। अतः आख़िरत में जब आमालनामा सामने रख दिया जाएगा, उस समय अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में दर्ज बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य। यह कैसी किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें अंकित न हो गयी हो।

परलोक की अवधारणा यह है कि जो कर्म मनुष्य इस दुनिया में करता है, परलोक में उसको वैसा ही बदला मिलेगा। कुरआन में है-"और उस दिन का डर रखो जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।" (कुरआन, 2:281)

अतः क़ुरआन में है–''और उस दिन का डर रखो जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटोगे, फिर प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कदापि कोई अन्याय न होगा।'' (क़ुरआन, 2:281)

इस दुनिया में भेजे जाने से पहले अल्लाह ने आदम की पूरी नस्ल से पूछा था–''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं?'' उन्होंने कहा ज़रूर आप ही हमारे रब हैं, और हम इस पर गवाही देते हैं। अल्लाह ने ऐसा इसलिए किया कि कहीं लोग क़ियामत के दिन यह न कह दें कि ''हम तो इस बात से बेख़बर थे।''

क़ियामत के दिन एक सूर फूंका जाएगा (प्रलय बिगुल बजा दिया जाएगा) और वे सब मर कर गिर जाएंगे जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह ज़िंदा रखना चाहे। फिर एक दूसरा सूर फूंका जाएगा और

अचानक सब उठकर चलने लगेंगे। ज़मीन अपने रब के नूर (प्रकाश) से चमक उठेगी, आमालनामा लाकर रख दिया जाएगा और कहा जाएगा–"आज प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा। आज कोई ज़ुल्म न होगा। निश्चय ही अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।" (क़ुरआन, 40:17)

ईमान रखने वाले और नेक अमल करने वालों को उनका आमालनामा दाएं हाथ में दिया जाएगा तथा ज़ालिमों को उनका आमालनामा बाएं हाथ में दिया जाएगा, ज़ालिम कहेगा कि काश उसे उसका आमालनामा दिया ही नहीं जाता। और जब सब ज़ालिम लोग जमा हो जाएंगे तो उनके कान, उनकी आंखें और उनके जिस्म की खालें उन पर गवाही देंगी कि वे दुनिया में क्या कुछ करते रहे हैं।

ये जिस्म की खालों से कहेंगे, "तुमने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी?" वे जवाब देंगी–"हमें उसी अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी है, जिसने हर चीज़ को बोलता कर दिया है।"

"वे उस दिन को भूल न जाएं, जबकि उनकी अपनी ज़बानें और उनके अपने हाथ-पांव उनकी करतूतों की गवाही देंगे।" (क़ुरआन, 24:24)

"आख़िरत में लोग अल्लाह के सामने वैसे ही अकेले हाज़िर होंगे जैसे पहली बार अकेले पैदा हुए थे। अतः वे लोग नुक़सान में पड़ जाएंगे जिन्होंने अल्लाह से अपनी मुलाक़ात की ख़बर को झूठ ठहराया होगा। जब अचानक क़ियामत आ जाएगी तो ये लोग कहेंगे, "अफ़सोस हम से इस मामले में कैसी चूक हुई।" इनकी हालत यह होगी कि अपनी पीठों पर अपने गुनाहों का बोझ लादे होंगे। जिसने आख़िरत की पेशी का इन्कार किया उसका सारा किया-धरा अकारथ गया।

इस्लाम धर्म में जिस प्रकार अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसके पैग़म्बरों और उसकी किताबों पर ईमान रखना फ़र्ज़ है, उसी प्रकार आख़िरत (परलोक) पर ईमान रखना भी अनिवार्य है। "क्या ये लोग इसके सिवा कुछ और बदला पा सकते हैं कि जैसा करें, वैसा भरें।" (क़ुरआन, 7:147)

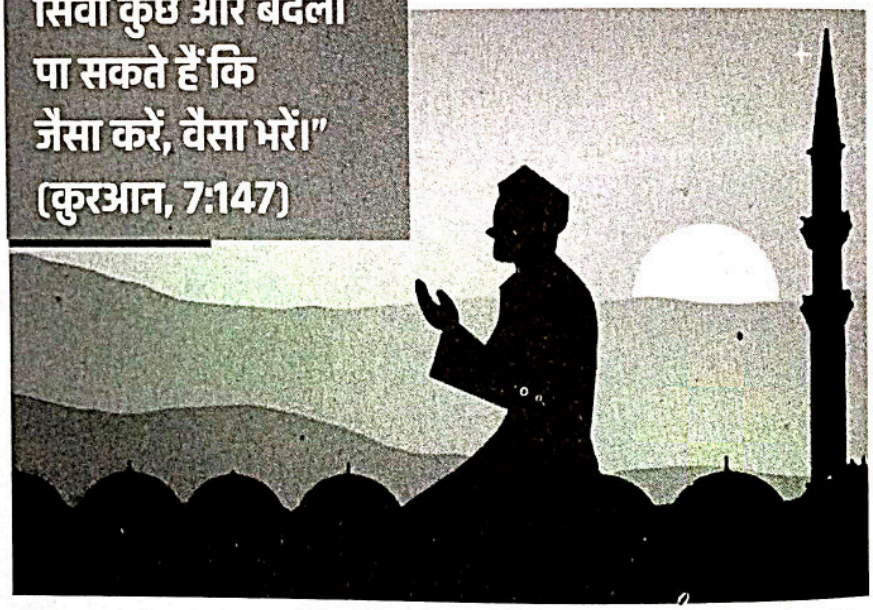

"क्या ये लोग इसके सिवा कुछ और बदला पा सकते हैं कि जैसा करें, वैसा भरें।" (क़ुरआन, 7:147)

क़ियामत के दिन जहन्नम सामने ले आयी जाएगी, उस दिन इन्सान को समझ आएगी, लेकिन उस समय उसके समझने का कोई लाभ उसे न होगा। यक़ीनन अगले और पिछले सब लोग आख़िरत के दिन जमा किये जाएंगे। उस दिन इन्सान को उसका सब अगला-पिछला किया कराया बता दिया जाएगा।

"फिर जब महाविपदा आएगी, उस दिन मनुष्य, जो कुछ भी उसने प्रयास किया होगा उसे याद करेगा।"

(क़ुरआन, 79:34-35)

जो कुछ भी लोग इस दुनिया में करते हैं वह अल्लाह के यहां चिट्ठों में अंकित है और हर छोटी-बड़ी बात लिखी हुई मौजूद है। उस समय हर गिरोह घुटनों के बल गिरा होगा, हर गिरोह को पुकारा जाएगा कि आए और अपना आमालनामा देखे। उस दिन लोगों को उनके कर्मों का बदला दिया जाएगा।

अब उस व्यक्ति की दुर्दशा का क्या अनुमान लगाया जा सकता है जो आख़िरत में अज़ाब की सख़्त मार अपने मुंह पर लेगा? ऐसे ज़ालिमों से तो कह दिया जाएगा कि अब चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम करते रहे थे। क़ियामत के दिन क़ब्रों में जो कुछ गड़ा हुआ है, उसे निकाल लिया जाएगा और सीनों में जो कुछ छिपा है, उसे निकालकर उसकी जांच-पड़ताल की जाएगी। जिसने कण भर भी नेकी की होगी, वह उसे देख लेगा और जिस किसी ने कण भर भी बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा। हर शख़्स को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा तथा आख़िरत में किसी जान पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। ■■

"जिन लोगों ने
ईश्वर को छोड़कर
दूसरे संरक्षक बना लिए हैं
उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है
जो अपना एक घर बनाती है और
सब घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर
मकड़ी का घर ही होता है।
काश! ये लोग ज्ञान रखते।
ये लोग अल्लाह को छोड़कर
जिस चीज़ को भी पुकारते हैं
अल्लाह उसे ख़ूब जानता है और
वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, 29:41.42)

with best compliment from

J. I. H. Tikait Nagar
Barabanki (UP)

KANTI Monthly, New Delhi
JUNE 2024
Posted on 20-21 May 2024
Published on 18 May 2024
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2024-2026
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2024-26
Total Pages with Cover: 52

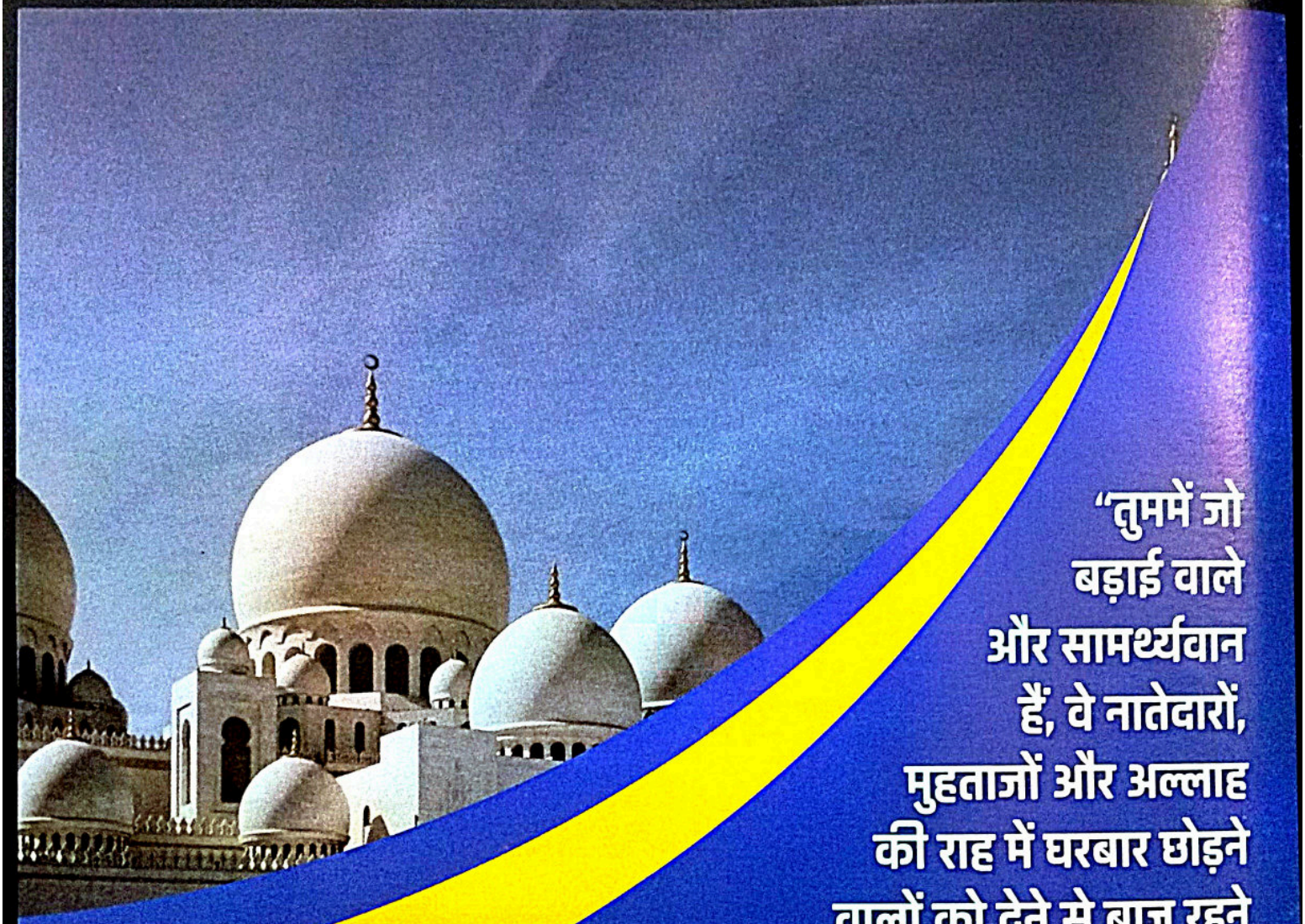

"तुममें जो बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।"

(कुरआन, 24:22)

with best compliment from

Jb. Emamul Haque
Durg (Chattisgarh)